राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

समय दर्शन

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक ख़बरों के साथ

वर्ष 14, अंक 35 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये दुर्ग, शुक्रवार 22 नवम्बर 2024 www.samaydarshan.in

24 को गोंड महासभा द्वारा युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

दुर्ग (समय दर्शन)। केन्द्रीय गोंड महासभा धमधागढ के तत्वाधान में बुढ़ादेव भवन, कंचना घुरवा देवालय सिविल लाईन में 24 नवंबर को सुबह 11 बजे से युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमें समाज के विवाह योग्य युवक-युवती, इच्छुक तलाकशुदा, विधवा अथवा विधुर को भी अपना परिचय देकर जीवन साथी चुनने का अवसर मिलेगा। इस संबंध में महासभा के केन्द्रीय अध्यक्ष एमडी ठाकुर ने कहा है कि यह कार्यक्रम विगत 30 वर्षों से आयोजित किया जा रहा है। जिसका लाभ समाज को मिल रहा है। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा गोंडवाना सगा पुस्तिका का विमोचन किया जाएगा। युवक-युवती परिचय सम्मेलन में हजारों की संख्या में युवक-युवती शामिल होंगे। जिसके चलते आयोजन की भव्य तैयारियां की गई है। यह जानकारी महासभा के केन्द्रीय सलाहकार सीताराम ठाकुर एवं पीएल नेताम ने दी है।

विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक है सुशासन : ओ.पी. चौधरी

- वित्त मंत्री ने सुशासन पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन का किया शुभारंभ
- देशभर में हो रहे नवाचारों, बेस्ट प्रेक्टिसेस और जनोन्मुखी कार्यों पर सम्मेलन में हो रहा विमर्श
- केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय तथा राज्य शासन के सुशासन एवं अभिसरण विभाग द्वारा नवा रायपुर में दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन

रायपुर (समय दर्शन)। सुशासन विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। इससे न केवल देश का सुव्यवस्थित विकास होता है, बल्कि यह नागरिकों के जीवन को भी बेहतर बनाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर प्रारंभ हुए स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, जीएसटी, जैम पोर्टल, डिजिटल इनक्लुजन जैसे नवाचारों ने देश में बड़ा बदलाव लाया है। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने आज नवा रायपुर में केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग तथा छत्तीसगढ़ शासन के सुशासन एवं अभिसरण विभाग द्वारा सुशासन पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए ये विचार व्यक्त किए। छत्तीसगढ़ सहित देशभर से आए भारतीय प्रशासनिक सेवा और केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के अधिकारी सम्मेलन में सुशासन के लिए किए जा रहे नवाचारों,

बेस्ट प्रेक्टिसेस और जनोन्मुखी कार्यों पर विमर्श कर रहे हैं।

नागरिक केंद्रित सुशासन पर आयोजित दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में ब्यूरोक्रेट्स की महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने सम्मेलन में भागीदारी कर रहे विभिन्न राज्यों के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से कहा कि सुशासन, नवाचार और बदलाव के लिए खुद को ट्रांसफॉर्म करना होगा, ताकि आप लोगों की प्रतिभा और व्यक्तित्व में क्षरण न हो। समय के साथ स्वयं को बदलने वाले ही प्रासंगिक रहेंगे। श्री चौधरी ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और सुशासन से वर्ष 2047 तक 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगी।

वित्त मंत्री श्री चौधरी ने सम्मेलन में कहा कि कई कलेक्टर और अधिकारी प्रभावी नवाचार कर रहे हैं। समय और अपने क्षेत्र की जरूरतों के अनुरूप बेहतर नागरिक सेवाएं डिलीवर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज सभी अधिकारियों को अपने कार्यक्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने की जरूरत है, तभी कल्याणकारी पहलों को नागरिकों तक प्रभावी तरीके से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के प्रति नजरिया तेजी से बदलेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि सम्मेलन में दो दिनों तक होने वाले नवाचारों, बेस्ट प्रेक्टिसेस और सुशासन के कार्यों की चर्चा से राज्य के अधिकारी भी प्रेरित होंगे और उन्हें यहां लागू करने की पहल करेंगे।

मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि सुशासन की सफलता तभी है जब हम जिनके लिए काम कर रहे हैं, उनके चेहरों पर मुस्कान ला पाएं। आपके लाभार्थी आपके कार्यों से संतुष्ट हैं, तो वही सुशासन की सफलता है। सुशासन के लिए लक्षित लोगों तक योजनाओं और कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पहुंचाने के लिए अच्छी नीयत सबसे ज़रूरी है। उन्होंने छत्तीसगढ़ में विभिन्न विकास प्राधिकरणों के गठन, रायपुर में कैनाल लिंकिंग रोड, एक्सप्रेस वे के निर्माण जैसे कई उदाहरण देते हुए कहा कि शासन-प्रशासन में यहां भी कई नवाचार हो रहे हैं। क्षेत्रीय और स्थानीय जरूरतों को देखते हुए उनके अनुरूप लोगों के कल्याण के काम हो रहे हैं। केन्द्रीय प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री पुनीत यादव ने उद्घाटन सत्र में कार्मिक एवं जन शिकायतों के निराकरण के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे नवाचारों की जानकारी दी। उन्होंने बताया की कई डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर तेजी से शिकायतों का निराकरण किया जा रहा है। देश के विभिन्न भागों में हो रहे नवाचार, बेस्ट प्रेक्टिसेस और सुशासन के कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित और पुरस्कृत किया जा रहा है।

आज के पहले सत्र में चार राज्यों में हो रहे अलग-अलग नवाचारों को साझा किया गया। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के महानिदेशक श्री एस.एन. त्रिपाठी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उत्तरप्रदेश में जल जीवन मिशन के संचालक श्री अनुराग श्रीवास्तव ने वहां सौर आधारित सफ्ल जल प्रदाय योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि सौर आधारित जल प्रदाय योजनाओं से उत्तरप्रदेश में अगले 30 सालों में एक लाख करोड़ रुपए की बचत होगी। इन योजनाओं से कार्बन उत्सर्जन भी कम होगा। ओड़िशा के कोरापुट जिले के कलेक्टर श्री वी. कीर्ति वासन ने ग्रामीण औद्योगिक काम्प्लेक्स के ज़रिए स्थानीय लोगों को रोज़गार से जोड़ने के लिए किए जा रहे नवाचार की जानकारी दी।

गौतम अडानी ने 2000 करोड़ का घोटाला किया, उन्हें तत्काल गिरफ्तार किया जाना चाहिए: राहुल गांधी

नईदिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने उद्योगपति गौतम अडानी के खिलाफ अमेरिकी अभियोजकों द्वारा लगाए गए आरोपों को लेकर बृहस्पतिवार को कहा कि यहां अडानी को तत्काल गिरफ्तार किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने 2000 करोड़ का घोटाला किया है। यहां छोटे अपराधी को तुरंत जेल में डाल दिया जाता है, लेकिन अडानी इतना बड़ा घोटाला करने के बाद भी खुले में घूम रहे हैं और जेल से बाहर हैं। उन्होंने संवाददाताओं से बातचीत में यह दावा भी किया कि गौतम अडानी की गिरफ्तारी नहीं होगी क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इनके साथ मिले हुए हैं। राहुल गांधी ने कहा, यह बहुत स्पष्ट हो गया है कि अडानी ने अमेरिका और भारत दोनों देशों में कानूनों को तोड़ा। मुझे हैरानी है कि अडानी खुले क्यों घूम रहे हैं, जबकि कई मामलों में मुख्यमंत्रियों तक को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी अडानी को संरक्षण दे रहे है और अडानी के साथ अपराध में संलिप्त हैं। राहुल गांधी ने कहा, अडानी को गिरफ्तार किया जाए, उनकी जांच और पूछताछ की जाए। इसमें जो लोग भी शामिल हैं उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जाए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने यह दावा भी किया कि मामले की जांच होने पर आखिर में प्रधानमंत्री का नाम सामने आएगा। उन्होंने कहा कि संसद के शीतकालीन सत्र में विपक्ष संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के गठन के लिए मांग जारी रखेगा। अमेरिकी अभियोजकों ने अडानी और उनके भतीजे सागर अडानी पर आरोप लगाया है कि उन्होंने भारतीय सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देकर सोलर एनर्जी कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए। इस कथित योजना के तहत 2020 से 2024 तक 25 करोड़ डॉलर (करीब 2236 करोड़ रुपये) की रिश्वत दी गई। अडानी पर आरोप हैं कि उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में सौर परियोजनाओं के अनुबंध और वित्त पोषण हासिल करने लिए बड़े पैमाने पर रिश्वत दी और यह बात उन्होंने अमेरिकी निवेशकों से छिपाई।

संक्षिप्त समाचार

जे एल एन कॉलेज में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह के तहत बुक क्लबिंग और लाइब्रेरी एक्टिविटी का आयोजन

जांजगीर (समय दर्शन)। 20 नवंबर को राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस के अवसर पर पंडित जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह कार्यक्रम का हुआ जिसमें मुख्य रूप से *प्राचार्य डॉ राजेश शर्मा,उप प्राचार्य सुश्री सिंपल रजक मैम* , सुश्री रजनी साहू मैम ग्रंथपाल , प्रीति देवांगन मैम ,श्री राजेंद्र विजयवार सर, श्री शिवरात्रि साहू सर ,अनुभव साहू सर ,आर्थो राठिया सर व समस्त स्टाफ के साथ साथ समस्त छात्रट्ठछात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।इस अवसर पर छात्रों द्वारा पुस्तक के प्रति रुचि बढ़चढ़ कर दिखी व अपने पसंद की पुस्तक के बारे में व्याख्यान प्रस्तुत किए, साथ ही प्रेरक चित्रकारी ने सबका मन मोह लिया।इस आयोजन पर पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से प्रतिभागियों का सम्मानित कर उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित किए।

जल जीवन मिशन के कार्यों को जल्द पूर्ण करें - मुख्य अभियंता श्री सिंह

मुंगेली /समय दर्शन। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग बिलासपुर परिक्षेत्र के मुख्य अभियंता संजय सिंह जिले के प्रवास पर रहे। इस दौरान उन्होंने विभागीय अधिकारियों की बैठक लेकर विकासखंडवार जल जीवन मिशन के कार्यों सहित निर्माणाधीन पानी टंकी के समीप जल स्रोत उपलब्धता की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को हर घर जल प्रमाणीकरण के कार्यों में गति लाने निर्देशित किया। इसके पश्चात मुख्य अभियंता सिंह ने जल जीवन मिशन योजना अंतर्गत खुड़िया समूह के कार्यों का निरीक्षण किया और आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान मुंगेली स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग मुंगेली के कार्यपालन अभियंता कुंदन राना, पथरिया एस.डी.ओ. सुधाकर सोनकुशरे, मुंगेली एस.डी.ओ. आशीष मिश्रा, सहायक अभियंता एच.एस. कंवर, उपअभियंता श्री प्रतीक पाटनी, राहुल देवांगन, कृष्ण मूर्ति एवं विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

सहकारी समिति रोहिना के प्राधिकृत अध्यक्ष ने संभाला कार्यभार

शंकर लहरे/ सरायपाली(समय दर्शन)। प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति रोहिना में नवनियुक्त प्राधिकृत अध्यक्ष के कार्यभार ग्रहण समारोह का आयोजन रखा गया। जिसके मुख्य अतिथि भंवरपुर भाजपा मंडल अध्यक्ष विद्याचरण चौधरी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति अध्यक्ष बनीतराम सिदार ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सहकारी समिति बड़े साजापाली के अध्यक्ष राजेंद्र कोसरिया, लंबर समिति अध्यक्ष उत्तर कुमार निषाद, उड़ेला समिति अध्यक्ष संतराम निषाद, सलखंड समिति अध्यक्ष झनक राम चौधरी, पूर्व जनपद सदस्य सोहनलाल पटेल, भंवरपुर कोऑपरेटिव बैंक शाखा प्रबंधक सी के विशाल, वरिष्ठ कृषक गणेश प्रसाद पटेल, भरत चौधरी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्याचरण चौधरी ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सहकारी समितियों के सफल संचालन एवं क्रियान्वयन के लिए किसानों के प्रतिनिधि के रूप में अध्यक्ष की नियुक्ति की गई है। किसानों को धान बेचने में किसी तरह की परेशानी न हो इसके लिए सरकार हर तरह की सुविधा माहिया कर रही है। उन्होंने यह भी जानकारी दी गई कि ग्राम पंचायत रोहिना सरपंच द्वारा पिछले दिनों संसद की आगमन पर उनसे उपार्जन केंद्र तक सीसी रोड निर्माण एवं आहता निर्माण की मांग सांसद से की गई थी जिस पर सांसद द्वारा इन मांगों को पूर्ण करने का आश्वासन दी गई। बनीतराम सिदार ने कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी दी गई है उसका निर्वाहन ईमानदारी पूर्वक करेंगे तथा किसानों की हर समस्या का समाधान के लिये हर समय तत्पर रहेंगे। आज के समारोह में सरपंच प्रतिनिधि चूड़ामणि साहू, समिति प्रबंधक सीताराम चौधरी, ऑपरेटर चंद्र कुमार पटेल, मधुसुदन सिदार, झनक पटेल, हेमंत यादव, प्रदीप पटेल, सोनू पटेल, हाईस्कूल जनभागीदारी समिति अध्यक्ष नेपाल साहू, लंबर समिति प्रबंधक तुलाराम चौहान, कृषक दिवाकर साहू, हलधर पटेल, सेतबसंत, मनोज पटेल, मोहर साय शिव अग्रवालआदि उपस्थित थे।

मम्तेश्वरी, जन्हावी व मोहित नायक, संदीप का चयन जूनियर बालक-बालिका का सांई एनसीओई सेलेक्शन ट्रायल हेतु

राजनांदगांव (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ की उदीयमान हॉकी खिलाड़ी मम्तेश्वरी लहरे, जन्हावी यादव व बालक वर्ग में मोहित नायक और संदीप कुमार का चयन जूनियर बालक-बालिका का चयन साई एनसीओई के सलेक्शन ट्रायल के लिए किया गया है। यह सलेक्शन ट्रायल बालक वर्ग का 3 से 11 दिसंबर 2024 तक बैंगलोर में और बालिका वर्ग का 16 से 24 दिसंबर 2024 तक बैंगलूरू में आयोजित है। बालक वर्ग में 39 और बालिका वर्ग में 40 खिलाड़ियों का चयन उक्त ट्रायल हेतु किया गया है।

छत्तीसगढ हॉकी के अध्यक्ष फिरोज अंसारी ने बताया कि मम्तेश्वरी लहरे जन्हावी यादव का साई एनसीओई सलेक्शन ट्रायल के लिए चयन विगत दिनों आयोजित 14वीं हॉकी इंडिया जूनियर बालिका हॉकी चैम्पियनशिप दिनांक 30 अक्टूबर से 10 नवंबर 2024 स्थान रॉची (झारखण्ड) में उनके उत्कृष्ट खेल के प्रदर्शन के आधार पर तथा मोहित नायक और संदीप कुमार का चयन विगत दिनों आयोजित 14वीं हॉकी इंडिया जूनियर बालक हॉकी चैम्पियनशिप दिनांक 9 से 19 सितम्बर 2024 स्थान जलांधर (पंजाब) में उनके उत्कृष्ट खेल के प्रदर्शन के आधार पर किया गया है।

छत्तीसगढ़ हॉकी के महासचिव मनीष श्रीवास्तव ने बताया कि मम्तेश्वरी लहरे स्पोर्ट्स अकादमी रायपुर व जन्हावी यादव और संदीप कुमार खेलो इंडिया सेंटर बिलासपुर में प्रशिक्षणरत है तथा मोहित नायक वर्तमान में नवल टाटा हॉकी एकेडमी जमशेदपुर में प्रशिक्षणरत है। सभी खिलाडियों की इस उपलब्धि पर सांसद संतोष पांडे, पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, अभिषेक सिंह, महापौर हेमा सुदेश देशमुख, नेता प्रतिपक्ष किशुन यदु, पूर्व राजगामी अध्यक्ष रमेश पटेल, छत्तीसगढ हॉकी के अध्यक्ष फिरोज अंसारी, छत्तीसगढ़ हॉकी के महासचिव मनीष श्रीवास्तव, जिला हॉकी संघ के सचिव शिवनारायण धकेता, रमेश डाकलिया, कुतुबुद्दीन सोलंकी, नरेश डाकलिया पूर्व महापौर, भुषण सॉव, गणेश प्रसाद शर्मा, दौलत सिंह चंदेल, नीलम चंद जैन, अनिल यादव, ज्ञानचंद जैन, सुश्री ऑशा थॉमस, कुमार स्वामी, अजय झा, प्रकाश शर्मा, अनुराज श्रीवास्तव, महेन्द्र सिंग ठाकुर, विरेन्द्र सिंग भाटिया, अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी मृणाल चौबे, गुणवंत पटेल, अब्दुल कादिर, राजू रंगारी, श्रीमति बबिता लिल्हारे, किशोर धीवर, शकिल अहमद ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

मेडेसरा में बीएसपी अन्नपूर्णा कक्ष का शुभारंभ

अहिवारा (समय दर्शन)। शासन की महत्वाकांक्षी योजना मध्यान्ह भोजन से प्रदेश भर में लाखों बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं,इसी तारतम्य में शासकीय प्राथमिक शाला मेडेसरा में भिलाई इस्पात संयंत्र नंदिनी मांइस द्वारा निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत अन्नपूर्णा कक्ष का निमार्ण किया गया है जिसमें बच्चों के लिए भोजनालय बनाया गया जिसमें भोजन पकाने के लिए रसोईघर एव बैठकर खाने के लिए कक्ष निर्माण किया गया है। अन्नपूर्णा कक्ष के लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन शासकीय प्राथमिक शाला मेडेसरा में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुधाकर जामूलकर महाप्रबंधक नंदिनी मांइस, अध्यक्षता संतोषी हुलास लोधी , विशिष्ट अतिथि एस के नायक उपप्रबंधक,एस बी प्रसाद उपप्रबंधक, लिमन साहु जनपद सदस्य,उषा केसरा उपसरपंच, कल्पना ध्रुव पंच,चकसुदरशन कश्यप पंच,टोमेनद निषाद पंच,मुरली शर्मा अध्यक्ष शाला विकास समिति,विजय निर्मल,केशव निषाद एबीईओ बेनीराम वर्मा, संकुल प्राचार्य रश्मि रंजना बंशियार, सीएसी सिद्धार्थ भुवाल मौजूद रहे। सर्वप्रथम सभी अतिथियों ने मां सरस्वती का पूजन अर्चना किया। सभी अतिथियों द्वारा कक्ष का लोकार्पण फीता काटकर एव रसोइकक्ष का हाथा सरपंच एवं उपसरपंच द्वारा किया गया तत्पश्चात संकुल प्राचार्य ने स्वागत भाषण में विद्यालय के साथ साथ संपूर्ण संकुल के शैक्षणिक विकास पर संसथागत सहयोग को महत्वपूर्ण मानते हुए आने वाले समय में और अधिक सहयोग करने की अपील किया। संकुल समन्वयक ने विद्यार्थियों के लिए दान को सबसे पूनित कार्य माना है। उपप्रबंधक प्रसाद जी ने अपने संस्था द्वारा किए गए विविध कार्यों की विस्तार से जानकारी देते हुए आने वाले समय में अन्य विविध कार्य कराने का आश्वासन दिया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में शाला की प्रगति प्रसन्नता जाहिर करते हुए भविष्य में हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अन्नपूर्णा कक्ष में प्राथमिक एवं माध्यमिक शाला के छ: सौ बच्चों का मध्यान भोजन वितरण किया जाता है जिसके लिए अब सुव्यवस्थित कक्ष का निमार्ण किया गया है। कार्यक्रम कि समाप्ति पर प्रधानपाठक सुनील बंछोर ने आभार व्यक्त किया। माध्यमिक शाला कि शिक्षिका मंजु सिंह ने अपने जन्मदिन के शुभ अवसर पर नयौता भोजन में सभी बच्चों के लिए खीर पुड़ी वितरित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि को विद्यालय की ओर से स्मृति चिन्ह एवं आभार पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से महेश साहू,कमल किशोर ध्रुव,ईशवरी कुमार, हेमलता सिंह, पुष्पलता साटकर,प्रतिमा दुबे, रुकमनी सोनी,नीति सिंह, वरुणा ताम्रकार, रेखा तिवारी,खिलावन साहू,ए एल केसरा,प्रीति वर्मा,रचना शर्मा,भूषण साहू,जानेशवरी साहू सहित पालकगण मौजूद थे।

केशरी एवं त्रिवेणी फॉर्मेसी कॉलेज में पोस्टर प्रदर्शनी आयोजित

जांजगीर (समय दर्शन)। समय दर्शन ,केशरी कॉलेज ऑफफार्मेसी खोखरा एवं त्रिवेणी कॉलेज ऑफ फार्मेसी तिलई के संयुक्त तत्वाधान में पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।फार्मेसी पोस्टर प्रतियोगिता में छात्र - छात्राओं ने स्वास्थ्य जागरूकता के प्रति अपनी रचनात्मकता दिखाई। पोस्टर में स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी गई जैसे कि दवाओं का सही उपयोग कैसे करें, स्वस्थ जीवनशैली और बीमारियों की रोकथाम । फार्मेसी के छात्र - छात्राओं ने पोस्टर बनाकर स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा दिया। पोस्टर में स्वास्थ्य जागरूकता के संदेश दिए गए जैसे कि ''स्वस्थ जीवन के लिए सुरक्षित दवाएं'' और ''स्वस्थ जीवनशैली के लिए नियमित व्यायाम''। फार्मेसी से संबंधित पोस्टर स्वस्थ जीवन के लिए सुरक्षित दवाएं, फार्मेसी: स्वास्थ्य की रीढ़, दवाओं का सही उपयोग, स्वास्थ्य की रक्षा कैसे करें, फार्मेसी की दुनिया में नवाचार,स्वास्थ्य सेवाओं में फार्मेसी की भूमिका

, दवाओं की गुणवत्ता कैसे बनाए रखें, फार्मेसी और स्वास्थ्य शिक्षा, दवाओं का दुरुपयोग कैसे रोकें, स्वस्थ भविष्य के लिए फार्मेसी की ओर , फॉर्मेसी और पर्यावरण संरक्षण विषयों पर आधारित था। संस्था के संचालक डॉ.सुरेश यादव के मार्गशन में आयोजित इस प्रतियोगिता में डी फार्मेसी प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के फार्मासिस्ट छात्र - छात्राओं ने अलग - अलग थीमों पर पोस्टर बनाकर अपने कला का प्रदर्शन किया।फार्मासिस्ट छात्र - छात्राओं के प्रयास की सभी ने भूरी - भूरी प्रशंसा किया। पोस्टर मेकिंग में डी फार्मेसी द्वितीय वर्ष की छात्रा पल्लवी कुर्रे प्रथम स्थान पर रहीं। जितेंद्र कटकवार द्वितीय तथा दीपिका पटेल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मिथलेश साहू एवं गुलशन पटेल का स्थान सराहनीय रहा। त्रिवेणी कॉलेज ऑफफार्मेसी से शशि श्रीवास प्रथम स्थान पर रही। राजकुमारी द्वितीय एवं नेहा महिपाल तृतीय स्थान पर रहीं। पोस्टर प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि के रूप में श्री के के यादव उप निरीक्षक सी आई एस एफ उपस्थित थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में छात्र - छात्राओं के कार्यों की सराहना करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले फार्मासिस्ट छात्र - छात्राये सम्मानित किए गये। प्रतियोगिता का आयोजन फार्मेसी महाविद्यालय के प्राचार्य रितेश पटेल के निर्देशन में हुआ। कार्यक्रम में संस्था के प्राध्यापक सी के सोनवानी ,चंद्रभूषण , मोहित सूर्यवंशी का विशेष सहयोग रहा।

जे. के. लक्ष्मी सीमेंट संयंत्र एवं चुना पत्थर खदान विस्तारी के लिए लोक जनसुनवाई संपन्न

अहिवारा (समय दर्शन)। जिला दुर्ग मलपुरी खुर्द जे. के. लक्ष्मी सीमेंट की लोक जनसुनवाई पर्यावरण संरक्षण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी डॉक्टर अनीता सावंत एवं पीठासीन अधिकारी व दुर्ग अपर कलेक्टर अरविंद एक्का की उपस्थिति में शांतिपूर्ण जनसुनवाई सम्पन हुई। वहीं लोगों ने कहा जे. के. लक्ष्मी सीमेंट की सीएसआर के अंतर्गत क्षेत्र में विकास कार्य करने के भी जानकारी दी विद्यार्थियों के लिए एवं बेरोजगारी के लिए रोजगार के लिए कौशल विकास के अंतर्गत जे. के. लक्ष्मी सीमेंट द्वारा केंद्र चलाए जा रहे है। लोगों ने संयंत्र विस्तार एवं चुना खदान पत्थर 1,2,3, का उत्खनन क्षमता विस्तार के लिए जन समर्थन दिया। जे. के. लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड (जे के एल सी एल) एकीकृत सीमेंट प्लांट, क्लिंकर (1.98 मिलियन टन प्रति वर्ष से 5.0 मिलियन टन प्रति वर्ष), सीमेंट (5.0 मिलियन टन प्रति वर्ष से 6.0 मिलियन टन प्रति वर्ष), सीपीपी (20 मेगावाट से 40 मेगावाट), डब्ल्यूएचआरबी (10 मेगावाट से 25 मेगावाट), डीजी सेट (1000 केवीए से 2000 केवीए) की मौजूदा विनिर्माण इकाई क्षमता का विस्तार, गांव मालपुरी खुर्द, खासाडीह, पोस्ट ऑफिस- अहिवारा, तहसील - अहिवारा, जिला दुर्ग (छत्तीसगढ़) में स्थापित करने का प्रस्ताव है।, और चूना पत्थर (4.8 मिलियन टन प्रति वर्ष से 8.0 मिलियन टन प्रति वर्ष) । संयंत्र के पास दो कैप्टिव चूना पत्थर खदानें हैं, जिनका खनन पट्टा क्षेत्र रूरू-1 267.695 हेक्टेयर और रूरू-11 252.105 हेक्टेयर है। ये खदानें ग्राम सेमरिया, घिकुरिया और नंदिनी - खुदानी, तहसील - धमधा, जिला - दुर्ग, छत्तीसगढ़ में हैं। ये खदानें एकीकृत सीमेंट संयंत्र से जुड़ी हुई हैं। दोनों पट्टे एम.एल.-1 और एम.एल.। इस प्रकार एक दूसरे से सटे हुए हैं कि एम.एल.-1, एम.एल.-1 से चारों ओर से घिरा हुआ है। खान पट्टा क्षेत्र एम.एल.-11 (252.105 हेक्टेयर) में नौ ब्लॉक हैं। नौ पट्टों का संचालन अलग-अलग तरीके से किया जाता है।

अब आवेदक पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) अधिसूचना, 2006 के अनुसार अपने मौजूदा एमएल-11 (252.105 हेक्टेयर) पर्यावरणीय मंजूरी में चूना पत्थर के उत्पादन खनन के विस्तार की मांग कर रहा है।

वर्तमान प्रस्ताव एकीकृत सीमेंट संयंत्र की मौजूदा विनिर्माण इकाई क्षमता के विस्तार के अनुरूप चूना पत्थर खानों की उत्पादन क्षमता का विस्तार है। मौजूदा और विस्तारित उत्पादन क्षमता विस्तार किया गया। कुछ लोगों ने इस सफल शांतिपूर्ण जनसुनवाई के लिए जे. के. लक्ष्मी सीमेंट के वाइस प्रेसिडेंट मुकुल श्रीवास्तव को धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष शिविर का आयोजन

पाटन (समय दर्शन)। शासकीय चंदूलाल चंद्राकार कला एवं विज्ञान महाविद्यालय पाटन जिला दुर्ग छत्तीसगढ़ ग्राम केसर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के साथ दिवसीय विशेष शिविर के तीसरे दिन के कार्यक्रम की शुरुआत प्रात: 5:00 बजे प्रभात फेरी के साथ हुआ। एनएसएस वॉलिंटियर्स के द्वारा प्रभात फेरी के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया गया। प्रात: 8:30 परियोजना कार्य के लिए सर्वप्रथम ग्राम की तरह के गठन का भ्रमण कर साफसफाई एवं पौधों के चारों ओर खरपतवार निकालने का कार्य किया गया, साथ ही चलित पशु चिकित्सा इकाई द्वारा निशुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें गे बल एवं बकरी उपचार कृमि नाशक दवा खिलाने एवं कीटनाशक दवाई पिलाई गई। इस शिविर के द्वारा 16 पशुओं का उपचार 34 पशुओं को कृमि नाशक एवं 54 पशुओं को चीनी नाशक दवाई पिलाई गई। इस शिविर में सभी एनएसएस वॉलिंटियर्स एवं अधिकारी एवं कर्मचारियों एवं ग्रामीण पशुपालकों का सक्रिय योगदान रहा। ग्राम प्रमुख भागवत राम सिंह सरपंच का विशेष सहयोग रहा उन्होंने सभी एनएसएस यूनिट को गठन भ्रमण कराया साथ ही मैदान में उपलब्ध सुविधा की जानकारी प्रदान की गई 10 50 शान द्वारा संचालित बड़ी योजना के माध्यम लगाए गए नर्सरी साग सब्जी फूल की खेती कला नर्सरी अमरूद का बागान आदि प्रत्यक्ष पहुंचकर नस के विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की गई। उसके बाद ग्रामीणों के सामूहिक दहन का भ्रमण किया गया वहां जानवरों के उपचार एवं वैक्सीनेशन में सहयोग प्रदान किया एनएसएस के एक ग्रुप के माध्यम से साल परिसर एवं बाजार चौक में साफसफाई का कार्य किया गया। नस का एक दल ने स्वल्पाहार एवं भोजन बनाने सही समय पर भोजन करने का कार्य सुचारू रूप से संपन्न किया। सा यूनिट परियोजना कार्य उपरांत स्नान ध्यान के साथ भोजन कर दोपहर 2:30 बजे बौद्धिक परिचर्चा का संचालन किया गया। बौद्धिक परिचर्चा के प्रथम समय में मुख्य अतिथि के रूप में पाटन से चालित पशु चिकित्सा इकाई से डॉक्टर प्राची यादव, नीरज महतो (सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्राधिकार) समीक्षा ताम्रकार (सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी) उपस्थित रहे। साथ ही शासकीय महाविद्यालय पाटन से डॉक्टर नंदा गुरवारा प्राचार्य बीएम साहू वरिष्ठ प्राध्यापक गौरव शर्मा सहायक प्राध्यापक उपस्थित रहे। साथ ही संस्कार गायत्री परिवार पाटन से एस आर बंदे गायत्री परिवार प्रमुख पाटन पंचराम साइन गायत्री परिवार सदस्य पाटन हेमराज निर्मलकर गायत्री परिवार युवा प्रभारी रुक्मणी निर्मलकर गायत्री परिवार नई प्रभारी श्रीमती देव श्री चंद्राकर गायत्री परिवार रानी तराई ओमप्रकाश चंद्राकर गायत्री प्रयापीठ रानीतराई एवं मदन लाल यादव गायत्री प्रयापीठ केसर दृष्ट सदस्य विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। बौद्धिक परिचर्चा के दौरान सहायक पशु क्षेत्र अधिकारी सुश्री समीक्षा निर्मलकर द्वारा मछली पालन बकरी पालन गाय पालन भैंस पालन कुकुर पालन एवं संरक्षण के उपाय के बारे में जानकारी प्रदानकी गई। उन्होंने गायब बेल बकरी में होने वाली प्रमुख बीमारी लंपी के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई साथ उनके कैसे जानवर बचाया जाए इसकी घरेलू उपचार एवं दवाई एवं वैक्सीनेशन को बताया। नीरज महतो द्वारा मछली पालन गाय पालन सूअर पालन कुकुर पालन के लिए सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजना के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई साथ में विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछे गए एवं उनका समाधान भी बताया इसके पश्चात डॉक्टर प्राची यादव पशु चिकित्सा में कुत्ते बिल्ली के काटने से कैसे बच्चे एवं उनसे होने वाली बीमारियों के लक्षण रेबीज का टीका कैसे कब लगाया जाए आदि की जानकारी दी गई साथ ही साथ गाय के थन में होने वाले थनैला बीमारी का विशेष रूप देसी इलाज के साथ देखभाल कैसे की जाए जानकारी दी गई। पशु के इलाज एवं उपचार के लिए शासन द्वारा जानकारी हेल्पलाइन नंबर 1965 तथा प्रमुख केदो की जानकारी पशु चिकित्सा इकाई के माध्यम से बताई गई तक पश्चात डॉक्टर गौरव शर्मा सहायक अध्यापक वाणिज्य के द्वारा डिजिटल भारत एवं युवा को जोड़ते हुए या निर्देशित करते हुए डिजिटलाइजेशन के उपयोग व महत्व एवं उनके होने वाले नुकसान से एनएसएस यूनिट का ध्यान आकर्षित किया।

डॉ नंद गुरवारा प्राचार्य शासकीय चंदूलाल चंद्र करिश्मा को उत्तर महाविद्यालय पाटन दूरी छत्तीसगढ़ में नस ऑल इंटीरियर संतुलित आहार एवं पोषण की जानकारी प्रदान की तथा विद्यार्थी व्यास पूछे गए प्रश्नों का विचार एवं उच्चतम भोजन एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए पौष्टिक आहार लेने की सलाह दी। उन्होंने नस विद्यार्थियों को फ्रूट वितरण केला संतुलित व पौष्टिक आहार ग्रहण करने के लिए संदेश दी गई। बौद्धिक परिचर्चा के द्वितीय चरणों में से बंधे गायत्री परिवार प्रधान द्वारा नशा मुक्ति भारत बनाने में युवक के योगदान की ओर इंगित किया साथ ही युवाओं को नशा से दूर रहने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहन प्रदान किया गया। तत्पश्चात हेमराज निर्मलकर गायत्री परिवार युवा प्रभारी द्वारा युवाओं को व्यक्तिगत निर्माण कैसे करें उसकी जानकारी विस्तार से दी गई। उन्होंने अनुशासन संतुलित आहार ईमानदारी समय पालन सद्भाव शिक्षा भाव एवं व्यक्ति के अन्य नैतिक मूल्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई।

श्रीमती रुक्मणी निर्मलकर नारी जागरण प्रमुख गायत्री परिवार के नारी उत्थान कैसे की जाए। समाज में नारी के महत्व नारी के बिना नारी के विकास अभाव में देश पर पड़ने वाले प्रभाव को विस्तार से समझाया। उसके बाद गायत्री परिवार एवं एनएसएस इकाई के द्वारा नशा मुक्त भारत के लिए रैली निकाली गई।

बौद्धिक परिचर्चा के तुरंत बाद सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें गायत्री परिवार से आए हुए सभी प्रमुख जैन एवं माता ने भजन कीर्तन एवं दीप प्रजाबलन कर विद्यार्थियों को आध्यात्मिक एवं ईश्वर से जुड़ने एवं आत्मा साथ करने हेतु प्रोत्साहित अध्यापक संदेश प्रदान किया।

सार समाचार

बाजार में खड़ी बाइक पार

रायपुर(समय दर्शन)। सोमवारी बाजार खरोरा में खड़ी बाइक को अज्ञात चोर ने पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर खरोरा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी तरूण बंजारे 20 वर्ष नवागांव खरोरा का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एनएस 2331 को सोमवारी बाजार खरोरा में खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 30 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर खरोरा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

अवैध शराब के साथ युवक गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। खरोरा पुलिस ने ग्राम कोरासी में दबिश देकर अवैध शराब के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से 22 पाव देशी शराब और बिक्री रकम 250 रुपए जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार खरोरा पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम कोरासी नहर पुलिया के पास दबिश देकर आरोपी खुबीराम धीवर 40 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से 22 पाव देशी शराब और बिक्री रकम 250 रुपए जब्त किया है।

वर्कशॉप से पांच नग लोहे का प्लेट पार

रायपुर(समय दर्शन)। देवकर वर्कशॉप गोंदवारा से अज्ञात चोर ने 5 नग लोहे का प्लेट पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर खमतराई पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी संदीप देसकर 40 वर्ष एकतानगर गुढ़ियारी का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि अज्ञात चोर ने गोंदवारा स्थित देवकर वर्कशॉप में दीवाल फांदकर अंदर प्रवेश किया और 5 नग लोहे का प्लेट पार कर दिया। चोरी गए जुमला कीमती करीब 20 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है।

मवेशी तस्करी करते दो लोग गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। मंदिरहसौद पुलिस ने ग्राम छतौना के पास बोलेरो वाहन में मवेशी तसकरी करते दो लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस ने 5 नग भैंस जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार मंदिरहसौद पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम छतौना चौक के पास दबिश देकर बोलेरो पिकअप वाहन में भैंस की तसकरी करते आरोपी नकुल हंस सहित एक अन्य को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने वाहन से 5 नग भैंस जब्त किया है।

5 से 20 वर्ष के आयु वर्ग के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए

खेल-खेल में बच्चों का अच्छे भोजन और अच्छी आदतों की दी गई शिक्षा

रायपुर(समय दर्शन)। विवेकानंद नगर रायपुर में आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 सानंद संपन्न हुआ। चातुर्मास के अंतिम कार्यक्रम के रूप में किड्स कार्निवाल का आयोजन प्रथम बार किया गया। 500 बच्चों की उपस्थिति रही। 5 से 20 वर्ष के आयु वर्ग के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। दोपहर 1 बजे से शाम 6 बजे तक हुए कार्यक्रमों में नॉलेज जोन, गेम जोन और फूड जोन की थीम से बच्चों एवं किशोरों को अच्छे भोजन,अच्छी आदतों और खेल खेल में धर्म से जोड़ा गया। प्रवेश द्वार का उद्घाटन परम पूज्य साधु भगवंतों एवं साध्वी भगवंतों ने किया। इस मौके पर चातुर्मास समिति के पुखराज मुणोत, सुरेश बरडिया, मांगीलाल बरडिया, महेंद्र सराफ, कुशल तालेड़ा,शिखर गोलछा मुख्य रूप से उपस्थित थे। विशेष सहयोग अरिहंत कलाकृति ग्रुप एवं महिला मंडल का रहा। हॉरर थीम के साथ प्रवेश द्वार बनाया गया था,जो बच्चों के लिए काफी रोमांचक रहा। बच्चों का भय दूर करना और मन से डर निकलना इस थीम का उद्देश्य रहा। नॉलेज जोन में बच्चों को डोज और डोनट्स अर्थात बच्चों को क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए की शिक्षा दी गई। अलग-अलग स्टॉल के माध्यम से अच्छे और बुरे के बीच का अंतर सिखाया गया। बड़ों के प्रति आदर,धर्म भावना जीव दया, अच्छी आदतें,स्वस्थ भोजन ग्रहण करना एवं जंक फूड का त्याग के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही नशा, पबजी, कार्ड जंक फूड से दूरी की शिक्षा दी गई। गेम जोन में जमीन पर बड़े फ्लोर में सांप सीढ़ी का खेल,लूडो, रिंग गेम, बोलिंग के साथ ही तीर्थ एवं तीर्थंकर के नाम से मैचिंग गेम्स खिलाए गए। इससे बच्चों का धर्म से जुड़ाव कराने खेल-खेल में धार्मिक गतिविधियों से जुड़ाव कराया गया। फूड जोन में बच्चों के पसंदीदा फूड्स गुपचुप,पॉपकॉर्न,कैंडी पनीर चिल्ली आदि साउथ इंडियन डिशेज रखी गई।

बिटकॉइन घोटाला : रायपुर में गौरव मेहता के घर पहुंची ईडी की टीम

रायपुर(समय दर्शन)। महाराष्ट्र चुनावा के दौरान सामने आये बिटकॉइन घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) बिटकॉइन घोटाले की जांच कर रही है। ईडी के अधिकारी बुधवार को रायपुर में गौरव मेहता के घर पहुंचे। उन्होंने यहां दस्तावेजों समेत पूरे घर की तलाशी ली। गौरव मेहता एक कंसल्टेंसी के लिए काम करते हैं, जो पुणे पुलिस को अमित भारद्वाज के 6,600 करोड़ के क्रिप्टोकरंसी घोटाले की जांच में मदद कर रही थी। एसीबी की उक्त कार्यवाही महाराष्ट्र के पूर्व आईपीएस अधिकारी रविन्द्रनाथ पाटिल के खूलासे के बाद की गई है। पाटिल ने मामले में मुख्य गवाह गौरव मेहता का नाम लिया था जो कि एक ऑडिट फर्म के कर्मचारी थे। बता दें कि पूर्व आईपीएस अधिकारी रवींद्र नाथ पाटिल ने आरोप लगाया था कि एनसीपी (शरद पवार गुट) की नेता सुप्रिया सुले और महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले क्रिप्टोकरेंसी घोटाले में शामिल हैं। उन्होंने दोनों नेताओं पर चुनाव प्रचार के लिए बिटकॉइन हेरफेर का इस्तेमाल करने का भी आरोप लगाया था। पूर्व आईपीएस अधिकारी ने यह भी आरोप लगाया था कि क्रिप्टोकरेंसी डीलिंग से प्राप्त नकदी का उपयोग महाराष्ट्र में वर्तमान चुनाव अभियान में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 2024 में लोकसभा चुनाव के दौरान भी इसी तरह की हेराफेरी की गई। रवींद्र नाथ पाटिल ने न्यूज़ एजेंसी से बात करते हुए पुणे के पूर्व पुलिस आयुक्त अमिताभ गुप्ता और साइबर अपराध जांचकर्ता भाग्यश्री नवटके पर आरोप लगाते हुए दावा किया कि वे बिटकॉइन घोटाले में शामिल थे। उन्हें सुप्रिया सुले और नाना पटोले से संरक्षण प्राप्त था। उन्होंने पूरे घोटाले का ब्यौरा साझा करते हुए बताया कि साल 2018 के बिटकॉइन क्रिप्टो करेंसी घोटाले में फ रेंसिक ऑडिट के लिए मेरी कंपनी केपीएमजी को अपॉइंट किया था। उसको मैंने लीड किया था। साल 2022 में मुझे उसी केस के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। मैंने 14 महीने जेल में बिताए। इस दौरान वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उन्हें क्यों फंसाया गया। उन्होंने और उनके सहयोगियों ने तथ्यों तक पहुंचने के लिए काम करना जारी रखा। आखिरकार, उन्हें चौंकाने वाले तथ्य मिले। रवींद्र नाथ पाटिल ने खुलासा किया कि मामले में एक प्रमुख गवाह, एक ऑडिट फ र्म के कर्मचारी गौरव मेहता ने पिछले कुछ दिनों में उनसे कई बार संपर्क किया था। जब पाटिल ने जवाब दिया, तो मेहता ने 2018 की क्रिप्टोकरेंसी धोखाधड़ी जांच के बारे में जानकारी साझा की।

मतगणना के लिए कर्मियों को दिया गया प्रशिक्षण

गंभीरतापूर्वक एवं सर्तकता से करें मतगणना कार्य, सभी कर्मचारियों के व्यवहार सहज हो: कलेक्टर

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर दक्षिण विधानसभा उप निर्वाचन 2024 के तहत 23 नवंबर को रायपुर जिले के सेजबहार स्थित शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में मतगणना होगी। इसी परिपेक्ष्य में आज सिविल लाइंस स्थित सर्किट हाउस के सभाकक्ष में मतगणना कर्मियों का प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जहां रिटर्निंग अधिकारी, सहायक रिटर्निंग अधिकारी, सुरक्षा नोडल, पोस्टल बैलेट नोडल, टेबुलेशन नोडल ,मतगणना पर्यवेक्षक, मतगणना सहायक एवं माइक्रो आब्जर्वर को मतगणना का प्रशिक्षण दिया गया। राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर ने कर्मियों को मतगणना में बरते जाने वाले सावधानियों और हर पहलुओं के बारिकियों की जानकारी दी। प्रशिक्षण स्थल पर मतगणना हॉल का मॉडल बनाया गया। जहां पर सभी मतगणना दल ने मॉडल का अवलोकन कराया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने कहा कि सभी कर्मचारी अपनी कार्यकुशलता और बेहतर स्कील के साथ कार्य करें। सभी कर्मी मतगणना कार्य के दौरान व्यवहार सहज रखें। डॉ. सिंह ने कहा कि टीम निर्वाचन प्रक्रिया का पूर्ण रूप से पालन करें। कलेक्टर ने कहा कि हर राउण्ड के बाद राजनैतिक अभिकर्ता के टेबुलेशन चार्ट पर अवश्य हस्ताक्षर लें। उन्होंने कहा कि मतगणना कार्य संवेदनशील है और बहुत ही सावधानीपूर्वक इस कार्य का क्रियान्वित करें। संयुक्त निर्वाचन पदाधिकारी पी. एस. ध्रुव ने कहा कि सभी कर्मचारी बेहतर तरीके से प्रशिक्षण प्राप्त करें साथ ही मतगणना का कार्य कुशलतापूर्वक किया जाएं। प्रशिक्षण की बारिकियों को समझा जाए और उसी के अनुरूप कार्य किया जाएं।

छत्तीसगढ़ के जनजातीय जीवन शैलियों पर निर्माणाधीन म्यूजियम अंतिम चरण में

प्रमुख सचिव ने म्यूजियम का कार्य जल्द पूरा करने के दिए निर्देश

रायपुर(समय दर्शन)। आदिम जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने बुधवार शाम नवा रायपुर स्थित आदिवासी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर में आदिम जनजातियों की जीवन शैलियों पर तैयार हो रहे म्यूजियम का निरीक्षण किया। उन्होंने विभागीय अधिकारियों और वेंडरों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय-सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। गौरतलब है कि शहीद वीर नारायण सिंह आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय के पास ही ट्रायबल म्यूजियम का निर्माणकार्य भी अंतिम चरण में है। यह ट्रायबल म्यूजियम जनजातीय जीवनशैली, उनके रहन-सहन, निवास गृह, पूजा पद्धति (देवगुड़ी), उनकी वेशभूषा, उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं को जीवंत प्रदर्शित करेगा। इसमें ज्यादातर वूडन कार्य होने के कारण प्रमुख सचिव बोरा द्वारा इसमें दीमकरोधी एवं पानी से बचाव को ध्यान में रखते हुए कार्य करने के निर्देश दिए। प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने कहा कि इन दोनों संग्रहालय के मूर्तरूप में आने के बाद निश्चित ही छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट पहचान मिलेगी। इस मौके पर विभागीय इंजीनियर, वरिष्ठ अधिकारी और ठेकेदार उपस्थित थे।

सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के लिए सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड भारत की एकमात्र कंपनी है जो कर्मचारी जीवनचक्र के हर हिस्से को प्रभावित करने वाली संपूर्ण मानव संसाधन श्रृंखला में प्रौद्योगिकी-संचालित मानव संसाधन समाधानों का एक व्यापक सूट प्रदान करती है। (30 जून, 2024 तक स्रोत: एफ्एंडएस रिपोर्ट) आईपीओ में 335 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का एक नया इश्यू और विक्रय शेयरधारकों द्वारा 4,739,336 इक्विटी शेयरों ('प्रस्तावित शेयर') की बिक्री के लिए एक प्रस्ताव (ओएफ्एस) शामिल है, जिसका अंकित मूल्य ?2 प्रत्येक इक्विटी शेयर है। सीआईईएल एचआर को पंडियाराजन करुप्पासामी (सीआईईएल एचआर ग्रुप के अध्यक्ष और कार्यकारी निदेशक) प्रमोट करते हैं। प्रवर्तक अध्यक्ष पंडियाराजन करुप्पासामी और प्रवर्तक निदेशक हेमलता राजन मा फोई मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्ववर्ती मा फोई) के मूल प्रवर्तक थे, यह एक एचआर कंपनी थी जिसे बाद में एक वैश्विक स्टाफिंग कंपनी द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया।

)क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर अपनी पत्नी अंजलि और बेटी सारा तेंदुलकर के साथ मुंबई में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए वोट डालने के बाद स्याही लगी अपनी उंगली दिखाते हुए।

भारत में OPPO Find X8 सीरीज़ लॉन्च हुई: अत्याधुनिक इनोवेशन के साथ फ्लैगशिप एक्सिलेंस पेश की गई

रायपुर। आज OPPO India ने भारत में OPPO Find X8 सीरीज़ का लॉन्च किया। OPPO की इनोवेशन की विरासत को आगे बढ़ाते हुए Find X8 सीरीज़ में फ्लैगशिप मीडियाटेक डायमेंसिटी 9400 SoC, दो टेलीफोटो लेंस के साथ क्वाड-कैमरा सेट-अप, हाई डेंसिटी क्विक चार्जिंग सिलिकॉन कार्बाइड बैटरी, और ColorOS 15(एंड्रॉयड 15 पर आधारित) जैसी खूबियाँ हैं। इसमें IP68 और IP69 रेटेड टिकाऊ और लाईटवेट बिल्ड के साथ फोटोग्राफी और Pro डक्टिविटी में सुधार के लिए अनेक AI फीचर्स दिए गए हैं। इस सीरीज़ में Find X8 Pro का मूल्य 16GB RAM + 512GB स्टोरेज के लिए INR 99,999 रुपये है। स्टैंडर्ड Find X8 दो स्टोरेज वैरिएंट्स 12GB + 256GB के लिए INR 69,999 रुपये और 16GB RAM + 512GB के लिए INR 79,999 रुपये में उपलब्ध है। ये सभी डिवाईस 3 दिसंबर से OPPO e-store, Flipkart एवं अन्य रिटेल आउटलेट्स से प्रि-ऑर्डर की जा सकेंगी। Pete Lau, SVP and Chief Product Officer, OPPO ने कहा, "OPPO की Find X8 सीरीज़ ने स्मार्टफोन की सीमाएं बढ़ा दी हैं। Find X8 और Find X8 Pro में अत्याधुनिक इंजीनियरिंग और Pro फेशनल फोटोग्राफी के लिए अल्ट्रा-ग्रेड कैमरा, अल्ट्रा-लॉंग लाइफ बैटरी लाइफ औरअल्ट्रा-पॉवरफुल परफॉरमेंस का बेहतरीन मिश्रण है।

तीन दिन की धान खरीदी में आकड़ा 3 लाख टन के पार, किसानों को 502.53 करोड़ रूपए का हो चुका भुगतान

रायपुर(समय दर्शन)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री दयालदास बघेल ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल पर छत्तीसगढ़ में 14 नवंबर से धान खरीदी का महाअभियान शुरू हो चुका है। 14 नवम्बर से अब तक मात्र तीन दिन की खरीदी में राज्य में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन का आकड़ा 3 लाख टन के पार पहुंच गया है। मंत्री श्री बघेल ने कहा कि धान खरीदी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। राज्य सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रदेश के पंजीकृत किसानों से 2739 उपार्जन केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर धान खरीद रही है। चालू विपणन वर्ष में 160 लाख टन धान उपार्जन का अनुमान है। देव-दीवाली 14 नवंबर से शुरू हुए धान खरीदी महापर्व के 6वें दिन तक 3.09 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है। राज्य के 68,668 किसान अब तक धान बेच चुके हैं। धान खरीदी के एवज में किसानों को बैंक लिंकिंग व्यवस्था के तहत् 502.53 करोड़ रूपये का भूगतान किया गया है। धान खरीदी का यह महाअभियान 31 जनवरी 2025 तक चलेगा।

खाद्य मंत्री श्री बघेल ने बताया कि प्रदेश के विभिन्न जिलों में आज 20,296 किसानों से 93 हजार 581 मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई है। राज्य में धान बेचने के लिए इस साल 27.68 लाख किसानों का पंजीयन हुआ है, जिसमें 1.42 लाख नए किसान शामिल है। उन्होंने बताया कि 19 नवम्बर के लिए कुल 23791 टोकन जारी किए गए थे। आगामी दिवस के लिए 19934 टोकन जारी किए गए है। मंत्री श्री बघेल ने बताया कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए उपार्जन केन्द्रों के माइक्रो एटीएम से दो हजार रूपए से लेकर दस हजार रूपए तक की राशि निकालने की सुविधा दी है, इससे किसानों को धान बेचने परिवहन के लिए किराए पर लिए गए ट्रैक्टर, मेटाडोर आदि का भाड़ा और हमाली-मजदूरी का भुगतान करने में सुविधा होगी। मुख्यमंत्री के इस फैसले से किसान बेहद प्रसन्न है। मंत्री दयाल दास बघेल ने बताया कि दूसरे राज्यों से धान के अवैध आवक/परिवहन की रोकथाम के लिए बॉर्डर इलाकों में विशेष निगरानी रखने के लिए चेक पोस्ट स्थापित किए गए हैं। धान खरीदी व्यवस्था पर निगरानी के लिए अलग अलग जिलों के लिए राज्य स्तरीय वरिष्ठ अधिकारियों की टीम बनाई गई है, जो लगातार इसकी मानिटरिंग कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आईसीए वैश्विक सहकारी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे

नई दिल्ली: भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे। इसकी घोषणा सहकारी संस्था इफ्को, भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालयऔर अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में की गई। वैश्विक सहकारी आंदोलन के लिए प्रमुख निकाय, अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) के 130 साल के लंबे इतिहास में पहली बारइफ्को की पहल परआईसीए महासभा और वैश्विक सहकारी सम्मेलन की मेजबानी भारत द्वारा की जाएगी। भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी ने बताया किभारत सरकार के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह 25 नवंबर 2024 को दोपहर 3 बजे अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। वे मुख्य अतिथि के रूप में वैश्विक सहकारी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष ङ्क 2025 पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा। इफ्को लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ उदय शंकर अवस्थी ने प्रेस को बताया कि भूटान के माननीय प्रधानमंत्री महामहिम दाशो शेरिंग तोबगे जी और फिजी के माननीय उप प्रधानमंत्री महामहिम मनोआ कामिकामिका भी सम्मानित अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। उन्होंने यह भी बताया कि यह कार्यक्रम 25 नवंबर से 30 नवंबर 2024 तक भारत मंडपम, आईटीपीओ, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

संपादकीय

व्हाइट हाउस में लौटने जा रहे ट्रंप

नतीजा वही उभरा, जिसका अनुमान पहले से था। अब डॉनल्ड ट्रंप व्हाइट हाउस में लौटने जा रहे हैं और उसके साथ ही उनसे जुड़ी रहीं तमाम अनिश्चतताओं और आशंकाओं की भी वापसी हो गई हैं। जो बाइडन व कमला हैरिस प्रशासन ने अपने ही कई फैसलों और नीतियों से खुद अपने समर्थन आधार की जड़ें कमजोर की थी। दूसरी तरफ डॉनल्ड ट्रंप ने गुजरे चार साल में ट्रंपिज्म को ना सिर्फ जिंदा रखा, बल्कि बाइडेन प्रशासन से बढ़े असंतोष को अपने पक्ष में संगठित करने में लगातार जुटे रहे। बाइडेन- हैरिस ने ट्रंप के खिलाफ आधे-अधूरे मन से कानूनी कार्रवाइयां कीं, जिनसे पूर्व राष्ट्रपति के समर्थकों में प्रतिशोध की भावना बढ़ाई। चुनाव अभियान के दौरान दो बार हुए जानलेवा हमलों ने ट्रंप के लिए सहानुभूति और बढ़ा दी। नतीजा चुनाव में लैंडस्लाइड जैसे जनादेश के रूप में सामने आया है। इस लहर पर सवार होकर ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी ने कांग्रेस (संसद) में भी निर्णायक जीत हासिल कर ली है। राज्यों के गवर्नरों के चुनाव में भी रिपब्लिकन पार्टी का पलड़ा भारी रहा। डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रबंधक चुनाव नतीजों की ईमानदारी से समीक्षा करें, तो उन्हें अपनी उन बड़ी गलतियों का अहसास होगा, जिनके कारण उन्हें इतना बड़ा झटका लगा है। ऊंची उम्मीदें जगाकर सत्ता में आने के बाद वादों से मुकरना, विदेश नीति में युद्ध को प्राथमिकता बनाना, और इस भरोसे बैठे रहना कि ट्रंप के भय से लोग डेमोक्रेटिक पार्टी को वोट डालने के लिए विवश बने रहेंगे, पार्टी को भारी पड़ा है। हकीकत यह है कि ट्रंपिज्म का समर्थन आधार लगातार मजबूत बना हुआ है, जो अब रिपब्लिकन पार्टी की आधिकारिक विचारधारा बन चुका है। इसका मुकाबला पुरानी मध्यमार्गी नीतियों से करने की रणनीति के सफल होने की संभावना आरंभ से ही कमजोर थी। ऊपर से बाइडेन की लगातार कमजोर होती गई मानसिक क्षमता डेमोक्रेट्स की बड़ी समस्या बन गई। इसके बीच अचानक कमला हैरिस को उम्मीदवार बनाने का दांव पार्टी ने चला, मगर यह साफ होता गया कि नई उम्मीदें जगाने का हैरिस के पास कोई एजेंडा नहीं है, जबकि बाइडेन की विरासत से रहा उनका जुड़ाव उन्हें महंगी पड़ेगा- यह शुरुआत से स्पष्ट था। आखिरकार नतीजा वही उभरा, जिसका अनुमान पहले से था। अब डॉनल्ड ट्रंप व्हाइट हाउस में लौटने जा रहे हैं और उसके साथ ही उनसे जुड़ी रहीं तमाम अनिश्चतताओं और आशंकाओं की भी वापसी हो गई हैं।

धीमी न्यायिक प्रक्रिया के विकल्प पर सोचना होगा

उमेश चतुर्वेदी

उलेमा बनाम उत्तरी दिल्ली मामले पर सुनवाई के दौरान जिस तरह सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणियां की थीं, इस मामले पर आए फैसले का अंदेशा उनसे हो गया था। सबसे बड़ी अदालत ने बुलडोजर कार्रवाई पर पूरी रोक तो नहीं लगाई है, लेकिन इसके लिए मानक प्रक्रिया बनाकर राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों के हाथ जरूर बांध दिए हैं। जैसा कि हर फैसले के साथ होता है, हर पक्ष अपने-अपने हिसाब से इसकी व्याख्या कर रहा है। बुलडोजर कार्रवाई के विरोधी इसे अपनी जीत बता रहे हैं, वहीं इसके समर्थक इस फैसले में भी कार्रवाई के लिए राह खोज रहे हैं। इससे साफ है कि बुलडोजर न्याय सिर्फ स्पीड ब्रेकर का काम करेगा, ब्रेक नहीं बन पाएगा। स्पीड ब्रेकर तेज रफ्तार वाहनों की रफ्तार को धीमी करता है, जबकि ब्रेक गाड़ी को रोक देता है। यह फैसला भी कुछ इसी तरह का साबित होने जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर कार्रवाई को नियंत्रित करते वक्त एक तथ्य पर ध्यान नहीं दिया है। हमारे यहां आपराधिक मामलों की सुनवाई की जो प्रक्रिया है और उसमें जिस तरह की देर लगती है, उसे अपराध करने वालों ने अपने लिए आड़ बना रखा है। बरसों तक धीमी गति से चलने वाली न्यायिक प्रक्रिया का एक संदेश यह है कि ताकतवर चाहे तो अपराध करने के बावजूद प्रक्रिया की घुमावदार गलियों में न्यायिक फैसले को टाल सकता है। यह टालना इतना लंबा हो जाता है कि एक तरह से वह न्याय से इनकार हो जाता है। देर है पर अंधेर नहीं की सोच भी उबाऊ और धीमी न्यायिक प्रक्रिया के सामने धुंधली होते-होते समाप्त हो जाती है। इसी घुमावदार और लंबी-धीमी न्यायिक प्रक्रिया का विकल्प बनकर बुलडोजर न्याय उभरा था। राज्य सरकारों ने इसे त्वरित न्याय के साधन के तौर पर अपनाया और देखत ही देखते अपराधमुक्त समाज की चाहत रखने वालों की चहेती बन बैठीं।

सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर कार्रवाई की मानक प्रक्रिया बनाते हुए त्वरित न्याय के विकल्प या न्यायिक प्रक्रिया की घुमावदार गलियों को पूरी तरह नजरंदाज किया है। यही

वजह है कि इस फैसले के बाद अपराधियों, गैंगस्टरों, असामाजिक तत्वों के उभार को लेकर समाज का एक बड़ा वर्ग सशंकित हो उठा है। देश की सबसे बड़ी अदालत होने के चलते सुप्रीम कोर्ट को इस सामाजिक सोच का भी संज्ञान लेना चाहिए और उसे भी आश्वस्त करना चाहिए कि उसके फैसले के बावजूद किसी गैंगस्टर, कोई अपराधी या समाज विरोधी तत्व को कमजोर तबके की जमीनों या सार्वजनिक संपत्तियों के अतिक्रमण का हक नहीं मिल जाता।

सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला उत्तरी दिल्ली के एक मामले में दिया है। अप्रैल 2022 में दिल्ली के जहांगीर पुरी में रामनवमी के दिन निकले जुलूस पर एक मस्जिद और उस इलाके से जुलूस पर हुए पथराव और उससे उपजी हिंसा के जवाब में दिल्ली नगर निगम ने अवैध अतिक्रमणों को हटाने के लिए बुलडोजर कार्रवाई की थी। इस कार्रवाई को सांप्रदायिक कार्रवाई का रंग देते हुए सेकुलर धारा के दिग्गज वकीलों मसलन कपिल सिब्बल आदि ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। भले ही सुनवाई इसी मामले की होती रही, लेकिन संदेश ऐसा गया मानो उत्तर प्रदेश की सरकार की बुलडोजर कार्रवाई के खिलाफ सुनवाई हो रही है। इसकी वजह यह रही कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने त्वरित न्याय के विकल्प के रूप में इसे अपनाया। तब उत्तर प्रदेश सरकार को लेकर यह छवि बनाई गई कि वह सिर्फ अल्पसंख्यक यानी मुस्लिम तबकों के खिलाफ ही बुलडोजर कार्रवाई करती है। जबकि योगी सरकार ने बिरादरी से ब्राह्मण लेकिन कर्म से माफिया और गैंगस्टर विकास दुबे के खिलाफ भी इस कार्रवाई को किया। भदोही के बिरादरी से पंडित गैंगस्टर और राजनेता विजय मिश्रा की अतिक्रमित संपत्तियां भी उत्तर प्रदेश सरकार के निशाने पर रहीं। लेकिन प्रचारित सिर्फ अतीक, मुख्तार जैसे मुस्लिम दबंगों और माफियाओं की संपत्तियों के खिलाफ हुई कार्रवाई ही की जाती रहीं। इस बहाने त्वरित न्याय के इस सरकारी विकल्प को हिंदुत्ववादी राजनीतिक दर्शन का ना सिर्फ नतीजा बताया गया, बल्कि यह नैरेटिव स्थापित कर दिया गया। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लेकर आम लोगों के बीच संदेश यही गया है कि यह उत्तर प्रदेश सरकार के खिलाफ आया फैसला है।

बुलडोजर कार्रवाई को लेकर प्रचारित सिर्फ योगी सरकार रही, लेकिन अवैध अतिक्रमण के खिलाफ आंध्र, तेलंगाना, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि सरकारों ने भी की है। एक आंकड़े के मुताबिक, पिछले सात सालों में करीब 2000 अवैध अतिक्रमण बुलडोजर कार्रवाई में ढहाए गए। जिनमें सबसे ज्यादा करीब डेढ़ हजार मामले उत्तर प्रदेश के ही रहे। लेकिन उत्तर प्रदेश में इस कार्रवाई से खाली कराई गई जमीनों को कमजोर तबकों में बांटा भी गया है। करीब सात सौ ऐसे प्लॉट बांटे जा चुके हैं। इसकी चर्चा कम हो रही है।

निश्चित तौर पर इससे किसी को इनकार नहीं होगा कि किसी अपराधी के अपराध की कीमत उसका पूरा परिवार अपना घर गवांकर क्यों चुकाए। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि अपराधी का घर भी अगर सरकारी तंत्र के निशाने पर बना तो उसकी वजह उसका नियमित निर्माण नहीं, बल्कि अवैध कब्जा और अतिक्रमण रहा। अब तक बुलडोजर कार्रवाई नगर पालिकाओं, पंचायती राज संस्थाओं का विषय रहा है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद इसे में स्थानीय जिला अधिकारी और उप जिलाधिकारी भी शामिल हो गए हैं। अवैध कब्जे और अतिक्रमण के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई जिला अधिकारी की निगरानी में होगी और इसके लिए मान्य प्रक्रिया और नोटिस आदि देने की अवधि का पूरी तरह निर्वहन किया जाएगा। इस प्रक्रिया की राह में एक बाधा नजर आ रही है। जिला प्रशासन समय और काम के बोझ का बहाना बनाकर ऐसी कार्रवाइयों को टाल सकता है। अपराधी, माफिया और गैंगस्टर कब्जे करते रहेंगे, और धीमी न्यायिक प्रक्रिया के चलते वे अपने अपराध को प्रकारांतर से स्थापित करते रहेंगे। इससे त्वरित न्याय प्रक्रिया की वैकल्पिक सोच भी कुंद होगी। ऐसे में न्याय की उम्मीद भी धुंधली होगी। ऐसे में आपराधिक तत्वों पर लगाम लगा पाना आसान नहीं रह जाएगा। बुलडोजर कार्रवाई के मानवीकरण वाले फैसले के बाद खास नैरेटिव को बढ़ावा मिलेगा। यह धारणा बलवती होगी कि सिर्फ हिंदुत्ववादी सरकारें ही बुलडोजर न्याय पर भरोसा करती हैं। सुप्रीम कोर्ट तो खुद मीडिया के बीच इस छवि के खंडन के लिए जा नहीं सकता। इसलिए दूसरे जिम्मेदार तंत्र को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए। लगे हाथों सुप्रीम कोर्ट को न्याय में देरी और उसकी धीमी प्रक्रिया को भी नियंत्रित करने की कोशिश करनी चाहिए। ताकि बुलडोजर न्याय की जरूरत ही ना पड़े। अगर न्यायिक प्रक्रिया सामान्य तरीके से चलती रहे तो शायद ही कोई होगा, जो बुलडोजर कार्रवाई को ही न्याय का अंतिम विकल्प माने।

अमेरिका के साथ भारत के संबंध अब भी अच्छे

एस. सुनील

ट्रंप का एक और भाषण जो भारत में बहुत प्रसारित हुआ उसमें उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार का मुद्दा उठाया। ट्रंप ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर जो अत्याचार हो रहा है वह बर्बर है। दुनिया का कोई नेता, जब बांग्लादेश में प्रताड़ित हो रहे हिंदओं के पक्ष में खड़ा नहीं हुआ तो ट्रंप हुए। क्या यह कोई मामूली बात है? क्या इस पर भारत के लोगों को खुशी नहीं मनानी चाहिए?

डोनाल्ड ट्रंप लौट आए हैं। अमेरिका के इतिहास में 131 साल में वे पहले राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने कमबैक किया है। चार साल राष्ट्रपति रहने और फिर बेहद कड़वाहट भरे चुनाव में हार कर सत्ता से बाहर होने के बाद वापसी करके ट्रंप ने दिखाया है कि वे एक योद्धा हैं। उनके ऊपर महाभियोग चला। कई मुकदमे हुए। मुकदमे में सजा हुई। चुनाव प्रचार के दौरान उनके ऊपर गोली चली। लेकिन वे मैदान में डटे रहे और चुनाव जीता। रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन ने नतीजों के 24 घंटे से ज्यादा समय बीत जाने के बाद जब बधाई दी तो उनके साहस और योद्धा वाली भावना की तारीफ की और कहा कि वे ट्रंप के साथ यूक्रेन युद्ध पर बात करने के लिए तैयार हैं। ध्यान रखने की जरुरत है कि ट्रंप ने चुनाव प्रचार में कहा था कि वे राष्ट्रपति बनने के बाद एक घंटे में यूक्रेन का युद्ध रुकवा देंगे। ट्रंप की जीत के बाद पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलदीमीर जेलेंस्की दोनों उम्मीद कर रहे हैं कि वे युद्ध खत्म कराएंगे। अगर ऐसा होता है तो सोचिए यह दुनिया के लिए कितनी राहत की बात होगी!

दुनिया का हर देश ट्रंप के लौटने को अपने हिसाब से देख रहा है और उस पर प्रतिक्रिया दे रहा है। यूरोप के देशों खास कर फ्रांस और जर्मनी की प्रतिक्रिया सधी हुई लेकिन आशंका वाली थी। ट्रंप के आने के बाद इमैनुएल मैक्रों और ओलाफ शुल्ज दोनों यूरोपीय संघ की एकजुटता की बात कर रहे हैं। ब्रिटेन की प्रतिक्रिया सामान्य थी लेकिन सबको पता है कि लेबर प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कोई बड़े प्रशंसक नहीं हैं। चीन के राष्ट्रपति ने तो उनको जीत पर निजी तौर पर बधाई ही नहीं दी। कुल मिला कर दुनिया के दो देश ऐसे हैं, भारत और इजराइल, जिनकी प्रतिक्रिया वास्तविक अर्थों में ट्रंप की जीत पर खुशी और संतोष वाली थी। इसी खुशी और संतोष के अंदाज में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने %अपने दोस्त डोनाल्ड ट्रंप' को बधाई दी। नतीजों के तुरंत बाद उन्होंने बधाई दी और उसके थोड़ी देर बाद दोनों की बातचीत भी हुई, जिसकी जानकारी खुद प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दी। आश्चर्य नहीं है कि डोनाल्ड ट्रंप की जीत पर आम भारतीय नागरिकों ने भी खुशी मनाई। भारत के लोगों ने उनके भाषणों के वीडियो शेयर किए। उनके दो भाषण सबसे ज्यादा शेयर किए गए। अपने एक भाषण में ट्रंप ने कहा कि, %मैं हिंदुओं का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। मैं भारत का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। अगर मैं चुनाव जीता तो हिंदुओं का, भारतीयों का एक सच्चा दोस्त व्हाइट हाउस में होगा'। उन्होंने आगे कहा, %भारतीय हिंदुओं की कई पीढ़ियों ने हमारे देश अमेरिका को मजबूत बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है'। अमेरिका में राष्ट्रपति के चुनाव के 256 साल के इतिहास में किसी राष्ट्रपति ने भारत और हिंदुओं के बारे में इतनी सकारात्मक, सार्थक और अच्छी बातें नहीं कहीं हैं। ट्रंप का एक और भाषण जो भारत में बहुत प्रसारित हुआ उसमें उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार का मुद्दा उठाया। ट्रंप ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर जो अत्याचार हो रहा है वह बर्बर है। दुनिया का कोई नेता, जब बांग्लादेश में प्रताड़ित हो रहे हिंदुओं के पक्ष में खड़ा नहीं हुआ तो ट्रंप हुए। क्या यह कोई मामूली बात है? क्या इस पर भारत के लोगों को खुशी नहीं मनानी चाहिए? ट्रंप की जीत पर भारतीयों के खुशी मनाने के एक नहीं कई कारण हैं। एक कारण तो यह है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ उनके निजी संबंध बहुत अच्छे हैं।

यदि रूस ने एटमी जंग छेड़ दिया तो अमेरिका व उसके मित्र देशों की तबाही तय है?

कमलेश पांडे

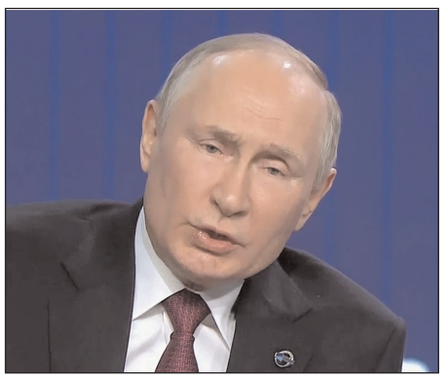

भारत के राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था कि फ्छीनता हो सत्व कोई, और तू त्याग-तप के काम ले यह पाप है। पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे, बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो फ्र शायद अपने मित्र देश के त्रिकालदर्शी कवित्व सोच पर तत्परतापूर्वक अमल करते हुए ही रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपनी फ्नई परमाणु नीति-2024फ्र पर साइन की हो। जिसमें दो टूक घोषणा की गई है कि यदि किसी भी परमाणु शक्ति वाले देश के समर्थन से कोई रूस पर हमला करता है तो इसे उनके देश पर संयुक्त हमला माना जाएगा। इसके तहत, अगर कोई देश किसी परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र के सहयोग से रूस या उसके मित्र देश पर हमला करता है, तो इसे रूस पर साझा हमला माना जाएगा और ऐसी हालात में रूस एटम बम का इस्तेमाल कर सकता है। बता दें कि पुतिन के न्यूक्लियर डेटरेंट फोर्स में जमीनी, समुद्री और वायुसेना शामिल है, यानी हमले पर रूस तीनों जगहों से पलटवार करेगा।

ऐसे में सवाल उठता है कि नई नीति पर साइन करने के बाद यदि रूस पर कोई भी बड़ा हवाई या ड्रोन हमला होता है तो वह परमाणु प्रतिक्रिया को जन्म दे सकता है। क्योंकि यूक्रेन संघर्ष के 1000 वें दिन रूस ने परमाणु हमले पर जो अपनी नीति बदली है, उससे स्पष्ट है कि अमेरिकी शह पर यदि यूक्रेन ने रूस के विरूद्ध ज्यादा घातक कार्रवाई की तो रूस इस हमले का जवाब एटम बम से देगा। यह सीधे में बने पूरे गठबंधन खासतौर पर अमेरिकी अगुआई वाले नाटो को दिया गया स्पष्ट संकेत है। हालांकि, रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि रूस परमाणु युद्ध छिड़ने से रोकने के लिए हर संभव कोशिश करेगा।

लेकिन सवाल है कि वह भी ऐसा तभी कर पाएगा जबकि दुनिया का सुपर पावर अमेरिका उसके पड़ोसी देशों को उकसाने की कार्रवाई बंद करेगा, जो वह करने वाला नहीं है। क्योंकि यह उसकी फितरत है, सत्तागत प्रवृत्ति है, कारोबारी प्रकृति है, जो हथियार निर्माता लॉबी की हथियार खपाओ रणनीति पर काम करती है, आधारित होती है।

बहरहाल, रूस ने जिस तरह से दावा किया है कि यूक्रेन ने अमेरिका से मिली लंबी दूरी की मिसाइल से उस पर हमला किया है। लिहाजा वह उचित तरीके से जल्द जवाब देगा, से यूरोपीय देशों में खलबली मच गई है। नॉर्वे, स्वीडन और फिनलैंड जैसे नाटो के देशों ने अपने-अपने नागरिकों को युद्ध के गंभीर होने को लेकर सतर्क किया है।

आलम यह है कि जहां एक ओर अमेरिका, यूक्रेन को रूस पर हमले के लिए लंबी दूरी की मिसाइल के उपयोग की अनुमति दे रहा है, उसे अमेरिकी लैंड माइंस देने का निर्णय लेता है, वहीं, दूसरी ओर यूक्रेन की राजधानी कीव में अपने दूतावास रूस के बड़े हमले के भय से बंद कर देता है। उसकी देखा-देखी नॉर्वे, स्वीडन और फिनलैंड भी अपने दूतावास बंद

कर देते हैं। उधर, यूक्रेन अपने शत्रु रूस के खिलाफ अमेरिकी मिसाइल के उपयोग के बाद ब्रिटिश (इंग्लैंड) मिसाइल का उपयोग करके रूस को और भड़काने की कोशिश करता है। इससे साफ है कि यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की विदेशी यानी नाटो देशों की मदद से रूस को पछाड़ने की फितरत से यूक्रेनियों को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं, जो उनकी सियासी मूर्खता है।

सवाल है कि जब पुतिन ने अपने देश में परमाणु युद्ध से बचाव वाले शेल्टर्स बनवाने शुरू कर दिए हैं तो यह तय भी कर लिया होगा कि जैसे अमेरिका ने जापान के खिलाफ परमाणु बम का प्रयोग करके विश्वशक्ति बन गया, कुछ वैसी ही ताकत यूक्रेन व उसको शह देने वाले देशों को परमाणु सबक सिखलाकर हासिल की जा सकती है। चीन से लेकर उत्तर कोरिया तक और ईरान जैसे देशों की रूस को इस नई रणनीति को मूक समर्थन प्राप्त है। वहीं, भारत की तटस्थता भी रूस के लिए समर्थन जैसा ही है।

दरअसल, कुछ दिन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भावनाओं को दरकिनार करते हुए यूक्रेन को रूस के भीतर अमेरिकी मिसाइलों के इस्तेमाल की मंजूरी की दी थी। जिस पर जवाबी कार्रवाई करते हुए पुतिन ने एटमी हथियार से जुड़े नए आदेश पर 19 नवम्बर 2024 मंगलवार को ही दस्तखत किए हैं। बता दें कि रूस ने 24 फरवरी 2022 को यूक्रेन में सैनिक उतारे थे, जिसके बाद यूक्रेन जंग के 1000 दिन इसी दिन को पूरे हो चुके हैं।

ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि आखिर पुतिन ने अपनी एटमी नीति क्यों बदली? तो जवाब में रूसी मामलों के जानकारों का कहना है कि पुतिन का मकसद यही है कि यूक्रेन का समर्थन कर रहे देश उस पर हमला न कर सकें। ऐसे खतरों से बचने के लिए ही एटमी हथियारों के इस्तेमाल की इजाजत देना एक तरह से पश्चिमी देशों को पीछे हटने को मजबूर करना है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका और यूरोपीय देशों से इंग्लैंड ने हाल में ही यूक्रेन को लंबी दूरी के हथियारों के इस्तेमाल की इजाजत दी है, जिसके दृष्टिगत अब तीसरे विश्व युद्ध का खतरा मंडराने लगा है? अमेरिका ने तो लैंड माइंस भी देने का निर्णय लिया है। इससे रूस आगबबूला हो चुका है। सवाल है कि अमेरिकी मंजूरी के बाद लगे हाथ यूक्रेन ने पहली बार रूस के अंदरूनी इलाके में अमेरिकी मिसाइलें दागी हैं। बताया गया है कि यूक्रेनी सेना ने मंगलवार तड़के ब्रांस्क (ब्रह्मडड्डह्यद्म) क्षेत्र में 6 अमेरिकी ्रञ्जस्न्रष्टरूस मिसाइलें दागी हैं। हालांकि, रूसी एयर डिफेंस सिस्टम एस 400 ने 5 मिसाइलों को मार गिराया। यह हमला कोरियाई सैनिकों की मौजूदगी वाले सैन्य ठिकानों पर किया गया। वहीं, रूस ने भी जवाब दिया, जिसमें 12 यूक्रेनीयों की मौतें हुई हैं। इससे नाटो देशों को अब एटमी जंग का खतरा मंडराता दिख रहा है। लिहाजा, इन देशों ने अपने नागरिकों को भयावह जंग के लिए तैयार होने की सलाह दी है। ब्रिटिश मीडिया के मुताबिक, नाटो देशों ने बाकायदा पर्चे छपवाकर लोगों से खाना-पानी जमा करने को कहा है। वहीं, स्वीडन ने लोगों से बंकरों में छिपने को कहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से स्वीडन ने ऐसा पांचवीं बार किया।

देखा जाए तो खुद रूसी फेडरेशन की सिक्योरिटी काउंसिल में डिप्टी चेयरमैन दिमित्री मेदवेदेव ने दो टूक कहा है कि रूस की नई परमाणु नीति का मतलब है कि हमारे देश के खिलाफ दागी गई नाटो मिसाइलों को रूस पर हमला मानेंगे। जिसके जवाब स्वरूप कीव और प्रमुख नाटो ठिकानों के खिलाफ चाहे वे कहीं भी हो, एटमी हथियार से जवाब दे सकते हैं। मतलब तीसरा विश्व युद्ध में कोई संशय नहीं! ये कभी भी शुरू हो सकता है! इसी नजरिए से रूस ने अपनी नई परमाणु नीति घोषित की है, जिसकी 6 बातें स्पष्ट हैं। पश्चिमी देशों को इस पर गौर करना चाहिए और किसी प्रकार की लापरवाही से बचना चाहिए। अन्यथा उनकी बचकानी हरकतें पूरी दुनिया को एक नई मुसीबत में डाल सकती हैं।

रूस की नई परमाणु नीति से 6 बातें स्पष्ट हैं- पहला, किसी एटमी ताकत वाले देश की मदद से रूस की सरजमी पर पारंपरिक मिसाइल से भी हमला होता है तो ऐसी स्थिति में रूस एटमी हथियार से जवाब देने को स्वतंत्र होगा। दूसरा, अगर रूस की सीमा पार करके कोई हथियार हवा से आता है, तो इसे रूस के खिलाफ जंग माना जाएगा। ऐसी स्थिति में भी परमाणु हथियारों का इस्तेमाल हो सकता है। तीसरा, रूस को अगर ऐसा लगा कि उसके देश को और लोगों को खतरा है तो वह एटमी मिसाइल और मिसाइल डिफेंस सिस्टम को तैनात कर सकता है। चौथा, कोई देश रूस के खिलाफ ड्रोन हमला करता है, तो भी इसका जवाब न्यूक्लियर डेटरेंस यानी एटमी हथियार से किया जा सकता है। पांचवां, रूस के खिलाफ बलिस्टिक मिसाइल का भी इस्तेमाल हुआ तो जवाब में पुतिन प्रशासन परमाणु हमला कर सकता है। छठा, स्पेस से हमले की स्थिति में रूस अपने मिसाइल डिफेंस सिस्टम को एक्टिवेट करेगा, साथ ही स्पेस में कभी एटमी हमला किया जा सकता है। इसलिए अमेरिका और उसके मित्र देश सावधान हो जाएं। क्योंकि यदि रूस ने उनके खिलाफ एटमी जंग छेड़ दिया तो अमेरिका व उसके मित्र देशों की तबाही तय है!

गडकरी जी बधाई के पात्र तो है ही?

ओमप्रकाश मेहता

आज देश पर राज कर रही भारतीय जनता पार्टी के अधिकांश छोटे-बड़े नेता सत्ता के झूले पर प्रसन्न मुद्रा में झूल रहे हैं, वही कुछ वरिष्ठ नेता ऐसे भी है, जिन्हें मौजूदा स्थिति की काफी चिंता है इन नेताओं में से केन्द्रीय मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता नितिन गडकरी ने तो अपनी वेदना सार्वजनिक रूप से व्यक्त भी कर दी, उनका स्पष्ट कहना था कि भारतीय जनता पार्टी की फसल अब जैसे-जैसे बड़ी होती जा रही है, उसमें कीड़े लगने की भी चिंता बनती जा रही है सत्तारूढ़ दल से जुड़े ऐसे स्पष्टवादी नेता आज बहुत कम है, सत्तारूढ़ दल के कभी अध्यक्ष रह चुके गडकरी जी की गिनती आज भी मुखर राजनेताओं में होती है, उनकी स्पष्ट राय है कि %%इस फसल पर लगे कीड़ों को नष्ट करने के लिए असरकारक कीटनाशक छिड़कने की बहुत तीव्र आवश्यक्ता है, वर्ना ये कीड़ें पूरी फसल को ही नष्ट कर देंगें।'' फसल बचाने के लिए यह त्वरित कदम जरूरी है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इन दिनों देश पर राज कर रही भारतीय जनता पार्टी में दल बदलकर आने वाले दागी नेताओं कार्यकर्ताओं का भीषण दौर जारी है और भाजपा के वरिष्ठ नेता बिना किसी की भी विगत जाने पार्टी में सभी को प्रवेश दे रहे है इसी व्यवस्था को इंगित करते हुए गडकरी ने यह चेतावनी पूर्ण बयान जारी किया है, उनका स्पष्ट कथन है कि जैसे-जैसे पार्टी का विस्तार हो रहा है, कुछ समस्याएं भी पैदा हो रही है, ऐसे दौर में पार्टी को अपनी स्वच्छता बनाए रखने के लिए सख्त कदम उठाने होंगे। उन्होंने अपने इस कथन को स्पष्टत उदाहरण के साथ समझाते हुए कहा कि पार्टी को कीटनाशक छिड़कने की जरूरत समझना चाहिए, क्योंकि जब फसल बढ़ती है तो बीमारियां भी बढ़ती है बीजेपी की फसल बहुत बड़ी हो गई है, जिसमें अच्छे अनाज के साथ कुछ बीमारियां भी गा गई है, इसलिए अब कीटनाशक का उपयोग जरूरी हो गया है। उन्होंने नए सदस्यों के %पार्टी प्रशिक्षण' पर भी जो दिया उनका कहना था कि भाजपा का मुख्य आधार चूंकि पार्टी का कार्यकर्ता ही है इसलिए इस आधार को मजबूर रखने के लिए उसे ठोस बनाकर रखना बेहद जरूरी है, उनका यह भी कहना था कि पार्टी में प्रवेशकर्ताओं की राजनीतिक विगत जानना भी बेहद जरूरी है और उनकी निष्ठा ओर सियासी चाहत को परखना भी जरूरी है। उन्हें पार्टी में प्रवेश के साथ ही पार्टी का पूरा ज्ञान कराना तथा जरूरी प्रशिक्षण पर भी गडकरी जी ने विशेष जोर दिया। अब भाजपा के वरिष्ठतम नेता नितिन गडकरी जी के ये बयान चाहे महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के संदर्भ में आए हो, किंतु मौजूदा राजनीतिक माहौल में इस खरी सीख का हर जगह अपना महत्व है देश में भाजपा अपना सदस्यता अभियान चला रही है और सदस्यता की स्पर्द्धा में ऐसे लोगों को भी सदस्यता दी जा रही है, जिनकी राजनीतिक विगत परखी नही गई है, ये अवसरवादी नेता पार्टी में प्रवेश के बाद अपना कौनसा स्वरूप स्पष्ट करेगें. यह भी संदिग्ध ही है, इसी प्रक्रिया पर पार्टी के पूर्व अध्यक्ष गडकरी जी ने चेतावनी भरी सीख जाहिर की है और प्रतीक स्वरूप कृषि कर्म की विसंगतियों का उदाहरण पेश किया है अब पूर्व अध्यक्ष इस चेतावनी भरे बयान को पार्टी कितनी गंभीरता से लेती है, यह तो भविष्य के गर्भ में है, किंतु यहां यह महत्वपूर्ण है कि राजनीतिक दलों में अब ऐसी आत्मघाती चेतावनी देने वाले नेता रहे ही कितने गए है?

घरों के डिजाइन और निर्माण में वास्तु शास्त्र का उपयोग

वास्तु शास्त्र इस समय पूरी दुनिया में लोकप्रिय है। ऐसा माना जाता है कि घरों के डिजाइन और निर्माण में वास्तु शास्त्र का उपयोग करने से मानव को सद्भाव और शांति की आवश्यकता होती है, जिससे बेहतर स्वास्थ्य, धन और जीवन संतुष्टि भी सुनिश्चित होती है। इसलिए घर के लिए वास्तु बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करता है। एक अच्छे घर के लिए वास्तु की मदद से अधिक सकारात्मक ऊर्जा मिलती है और व्यक्ति के जीवन से सभी नकारात्मक पहलू दूर हो जाते हैं। जैसे घर में ख़राब वास्तु खराब स्वास्थ्य, विवाह में कलह, धन संबंधी समस्या, करियर में निराशा आदि के रूप में असंतोष का कारण बन सकता है। इसलिए, घर के लिए वास्तु का उचित मार्गदर्शन और ज्ञान प्रत्येक गृहस्वामी के लिए आवश्यक है। घर बनाने से पहले, आपको वास्तु शास्त्र विशेषज्ञों से परामर्श करना चाहिए। इसका व्यक्ति के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

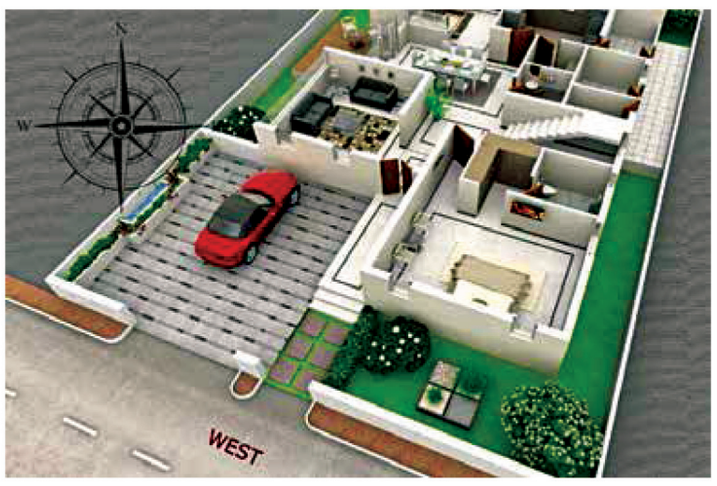

रंगों का चयन करें

वास्तु शास्त्र में रंगों का बहुत महत्व है। प्रत्येक रंग का वास्तु ऊर्जा से सीधा संबंध होता है। घर की दीवारों पर पेंटिंग करने से पहले आपको वास्तु ग्रिड का उपयोग करके दीवारों का विश्लेषण करना चाहिए। वास्तु पुरुष मंडल का सटीक स्थान निर्धारित करने के बाद ही दीवारों का रंग चुनना चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार आमतौर पर उत्तर दिशा में लाल और पीले रंग का प्रयोग करने से बचना चाहिए । घर की दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की दीवारों पर नीले रंग से परहेज करें। इसलिए घर के वास्तु पक्ष में कुछ रंग शुभ और अशुभ परिणाम देते हैं।

वास्तु के अनुसार करें इंटीरियर और फर्नीचर की व्यवस्था

घर का आंतरिक लेआउट या फर्नीचर की व्यवस्था वास्तु नियमों के अनुरूप होनी चाहिए। घर के वास्तु में प्रत्येक क्षेत्र एक विशेष भूमिका निभाता है और विभिन्न आकारों का कुछ वास्तु क्षेत्रों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, उत्तर दिशा की ओर मुख करके गोल या त्रिकोणीय आकार से बचने की आवश्यकता है। वहीं, फर्नीचर को दक्षिण या दक्षिण-पूर्व दिशा में त्रिकोण आकार में रखना लाभकारी माना जाता है। लकड़ी का

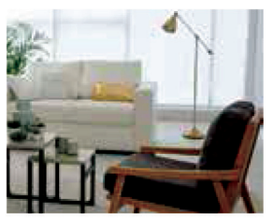

फर्नीचर घर के उत्तर, पूर्व और दक्षिण में रखा जा सकता है, लेकिन वास्तु नियमों के अनुसार धातु के फर्नीचर को पश्चिम दिशा में रखने की सलाह दी जाती है।

वास्तु के अनुसार घर में लगाएं पौधे

बहुत से लोग अपने घर में अपने कुछ पसंदीदा हाउसप्लांट लगाना चाहते हैं जो वास्तव में घर की सुंदरता और प्राकृतिक ऊर्जा को बढ़ाते हैं । हालाँकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वास्तु शास्त्र घर में बहुत अधिक पौधे न रखने की सलाह देता है। अपने घर में कैक्टस या अन्य कांटेदार पौधे या ऐसे पौधे न रखें जो सफेद तरल पदार्थ निकालते हैं । वास्तु शास्त्र के अनुसार घर की पूर्व या दक्षिण दिशा की खिड़कियों पर इनडोर पौधे लगाने चाहिए।

घर के लिए महत्वपूर्ण वास्तु टिप्स

घर का मुख्य द्वार वास्तु पुरुष मंडल के शुभ स्थान पर होना चाहिए। हमेशा नैऋत्य कोण से दरवाजा बनाने से बचें। वास्तु के अनुसार घर में शयनकक्ष का आदर्श स्थान दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दिशा में होता है। घर की रसोई हमेशा आग्नेय कोण या वायव्य कोण में बनानी चाहिए। अपनी रसोई उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पश्चिम कोने में बनाने से बचें। घर के उत्तर-पूर्व में पूजा कक्ष बनाने से घर की सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। वास्तु द्वारा पूजा कक्ष के बारे में और जानें। मध्य भाग को ब्रह्मस्थान कहा जाता है। इस ब्रह्मस्थान में कभी भी दीवार या स्तम्भ का निर्माण न करें। अपने घर में ब्रह्मस्थान को हमेशा खाली रखें।

सुबह उठते ही न देखें ये 3 चीजें / वास्तु के अनुसार माना जाता है अशुभ

सुबह की शुरुआत हमेशा अच्छी होनी चाहिए। सुबह की शुरुआत अच्छी होने से पूरा दिन अच्छा जाता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार सुबह कुछ चीजों के दर्शन नहीं करने चाहिए। सुबह- सुबह इन चीजों को देखना अशुभ रहता है। इन चीजों को देखने से पूरा दिन खराब जाता है। आइए जानते हैं, वास्तुशास्त्र के अनुसार सुबह के समय कि बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

सुबह के समय बंद घड़ी को न देखें

सुबह के समय बंद घड़ी को नहीं देखना चाहिए। बंद घड़ी को देखने सेपूरा दिन खराब जाता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में बंद घड़ी नहीं रखनी चाहिए। बंद घड़ी रखना अशुभ होता है।

जूठे बर्तन नहीं देखने चाहिए

वास्तुशास्त्र के अनुसार सुबह- सुबह जूठे बर्तन नहीं देखनेचाहिए। सुबह के समय जूठे बर्तन देखना शुभ नहीं माना जाता है। रात को सोनेसेपहलेजूठे बर्तन धोकर रख लेनेचाहिए। रात को जूठे बर्तन रखनेसेआर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

सुबह उठते ही शीशा न देखें

वास्तुशास्त्र के अनुसार बह उठते ही शीशा नहीं देखना चाहिए। सुबह उठते ही शीशा देखना अशुभ माना जाता है। सुबह उठते ही शीशा देखने से पूरा दिन खराब जाता है।

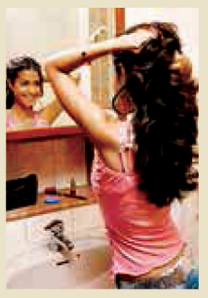

माथे का कालापन दूर करने के लिए नुस्खे

बेदाग निखरी त्वचा हर किसी की पहली ख्वाहिश होती है। लेकिन कई बार शरीर में पोषक तत्वों की कमी, हार्मोनल चेंज, तेज धूप या त्वचा में मेलेनिन की अधिकता होने से माथा काला नजर आने लगता है। जो कई तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स यूज करने और फेशियल करवाने से भी ठीक नहीं होता है। अगर आपके साथ भी ऐसी ही कोई समस्या है तो टेंशन छोड़िए और अपनाएं दादी-नानी के ये घरेलू नुस्खे।

■ कच्चा दूध

चेहरे के लिए कच्चा दूध बेहद फायदेमंद माना जाता है। कच्चे दूध को चेहरे पर लगाने से चेहरे की झुर्रियों और काले धब्बों से जल्द छुटकारा मिल सकता है। इस उपाय को करने के लिए कच्चे दूध में गुलाब जल मिलाकर माथे पर लगाकर 5 मिनट तक मसाज करते रहें। कुछ दिन तक यह उपाय करने से माथे का कालापन दूर हो जाएगा।

■ बादाम का तेल

बादाम का तेल भी त्वचा के लिए अच्छा माना जाता है। बता दें, बादाम का तेल त्वचा को यूवी किरणों और सूजन से बचाता है, जिससे त्वचा हेल्दी बने रहने के साथ लचीलेपन को भी बनाए रखती है। बादाम के तेल में मौजूद जिंक सीबम उत्पादन को नियंत्रित करके रोमछिद्रों को खोलने और मुंहासे से जुड़ी सूजन को कम करने में मदद करता है, जिससे त्वचा साफ होती है। माथे का कालापन साफ करने के लिए बादाम के तेल में शहद और दूध पाउडर मिलाकर एक पेस्ट तैयार करें। अब इस पेस्ट को माथे पर लगाकर सूखने दें। जब यह पेस्ट सूख जाए तो पानी से मुंह धो लें।

■ खीरा

खीरा त्वचा को नमी प्रदान करके हाइड्रेटेड बनाए रखता है। माथे का कालापन दूर करने के लिए खीरे को टुकड़ों में काटकर उसका रस निकालकर चेहरे पर दस मिनट तक लगा रहने दें। इसके बाद चेहरे को ठंडे पानी से धो लें।

ठंड में इन हेल्दी ड्रिंक्स की ले

ठंड शुरू हो चुका है। सुबह और शाम गिर रही हल्की ओस के कारण ठंड का एहसास होने लगा है। धीरे-धीरे और कड़ाके की ठंड पड़ेगी। ठंड की वजह से शरीर को बीमार बनने से बचाने के लिए खानपान का विशेष ध्यान रखना होता है। खानपान का सही ढंग से ध्यान रखने से न सिर्फ आप अपने शरीर को गंभीर समस्याओं से बचा सकते हैं बल्कि शरीर की इम्यूनिटी को भी मजबूत कर सकते हैं। ठंड के दिनों में शरीर को गर्म रखने के लिए आप कुछ हेल्दी ड्रिक्स को अपने रूटीन में शामिल कर सकते हैं। इन्हें पीने से न सर्फि आपके शरीर को गर्माहट मिलेगी, बल्कि आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ेगी। आइये जानते हैं ऐसे ही ड्रिंक्स के बारे में जिन्हें आप ठंड के दिनों में पी सकते हैं।

▸▸ बादाम वाला दूध

सर्दी के मौसम में बादाम का दूध पीना काफी हेल्दी होता है। दूध और बादाम में मौजूद पोषक तत्व आपको ढेरों फायदा पहुंचा सकते हैं। इस ड्रिंक को बनाने के लिए आपको पिसे हुए बादाम को दूध में मिलाना होगा और कुछ देर तक उसे उबालना होगा। इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए आप इसमें केसर भी डाल सकते हैं। ये ड्रिंक आपके शरीर को गर्माहट से भर देगी।

▸▸ ग्रीन टी

हेल्दी ड्रिंक्स में एंटीऑक्सीडेंट के लिए ग्रीन टी सबसे अच्छा माना जाता है। यह शरीर की कोशिकाओं को हाइड्रेट रखने में मददगार है। इसके अलावा ग्रीन टी पीने से वजन को भी कंट्रोल कयिा जा सकता है। ग्रीन टी डायबिटीज, अल्जाइमर, हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों के स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है।

▸▸ अदरक की चाय

अदरक सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। यह सर्दियों में एलर्जी से बचाने के साथ वजन घटाने में भी मदद करता है। इसलिए सर्दी के मौसम में अदरक की चाय जरूर पीना चाहिए।

रग-रग में भर जाएगी गर्माहट

▸▸ हल्दी वाला दूध

भारत के सभी घरों में हल्दी मौजूद होता है। कसिी के भी बीमार पड़ने पर हल्दी का दूध जरूर दिया जाता है, जो बेहद फायदा भी करता है। यह ड्रिंक आपको गर्म रखने के साथ इम्यूनिटी को बढ़ावा भी देती है। यह गोल्डन मिल्क सर्दी और ज़ुकाम को भी ठीक करता है।

▸▸ काढ़ा

काढ़ा हमारी बॉडी को पर्याप्त पोषण देता है। अगर आप सर्दी में खुद को बीमारियों से दूर रखना चाहते हैं तो इलायची, दालचीनी, अदरक, काली मिर्च और तुलसी के पत्तों को पानी में मिला कर उबाल लें। फिर उसे छान कर चाय की तरह पी लें। इससे आपको गर्माहट तो मिलेगी ही, आपकी बॉडी भी एनर्जी से भरपूर रहेगी।

इसके अलावा अदरक शरीर को डिटॉक्स भी करता है और गर्मी प्रदान करता है।

चुस्कियां

घर में रखें फेंगशुई के 5 लकी आइटम्स, बढ़ेगी रौनक

वास्तु शास्त्र की ही तरह कई उपाय व तरीके बताएं गए हैं। इन तरीकों की मदद से आप अपने घर का माहौल खुशहाल बना सकते हैं। फेंग शुई चीनी शास्त्र है, जिसकी मदद से घर की नेगेटिव एनर्जी को भी कम किया जा सकता है। फेंग शुई चीनी शास्त्र में कुछ ऐसी चीजें भी बताई गई हैं, जिन्हे घर में रखना बेहद शुभ माना जाता है। आइए जानते हैं फेंग शुई के किन लकी आइटम्स को घर में रखने से रौनक बनी रहती है-

- **ईविल आई-** अगर आप बुरी नजर से परेशान हैं तो अपने घर में ईविल आई ले आएं। घर में ईविल आई रखने से घर व परिवार के सदस्यों को बुरी नजर से बचाया जा सकता है।
- **जेड प्लांट-** जेड प्लांट काफी लकी माना जाता है। मान्यता है इस पौधे को घर के एन्ट्रेंस पर रखने से पॉजिटिव एनर्जी का संचार होता है और नेगेटिव एनर्जी दूर होती है। न केवल ये पौधा ऑक्सीजन बढ़ाएगा बल्कि सुख-समृद्धि में वृद्धि भी करेगा।
- **कछुआ-** फेंग शुई विद्या के अनुसार, घर में कछुआ रखना बेहद शुभ माना जाता है। घर में उत्तर की दिशा का संबंध धन के देवता कुबेर जी से है। इसलिए उत्तर दिशा में पानी के जार में कछुआ रखने से आर्थिक दिक्कतें दूर हो सकती हैं। उत्तर दिशा में कछुआ रखने से भगवान कुबेर की कृपा दृष्टि बनी रहती है।
- **चीनी सिक्के-** फेंग शुई विद्या में चीनी सिक्कों का काफी महत्व है। माना जाता है इन सिक्कों को लाल रंग के कपड़ें में बांधकर तिजोरी के अंदर रखने से दरिद्रता दूर होती है और सुख-समृद्धि का वास होता है।
- **क्रिस्टल-** फेंगशुई विद्या के अनुसार, घर में फेंग शुई क्रिस्टल रखना बेहद शुभ माना जाता है। घर में क्रिस्टल रखने से घर की समृद्धि बरकरार रहती है।

सर्दी-जुकाम से निपटने में कारगर है अजवायन

ठंड में इस तरह खाएं

भारतीय किचन में अजवायन का खूब इस्तेमाल किया जाता है। ये कई औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। इसमें कई तरह के पोषक तत्व होते हैं। इसकी एंटीफंगल, एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट प्रॉपर्टीज पाचन से जुड़ी समस्याओं से निजात दिलाने में मदद करते हैं। इसके अलावा इसकी खुशबू से सर्दी जुकाम भी ठीक हो सकता है।

1) अजवाइन पेट की समस्याओं से निपटने में मदद कर सकता है। यह एसिडिटी, अपच और पेट फूलने जैसी अलग-अलग पाचन समस्याओं के इलाज में फायदेमंद होता है। अजवाइन एक्टिव एंजाइम गैस्ट्रिक जूस के स्राव में सुधार करके पाचन को बढ़ावा देने में मदद करता है। अजवाइन के बीज के अर्क का इस्तेमाल पेट और आंत के घावों को ठीक करने और पेप्टिक अल्सर के इलाज में मददगार है।

2) अजवाइन हानिकारक बैक्टीरिया और फंगी के विकास को रोकता है। रिपोर्ट्स कहती हैं कि अजवाइन के बीज ई. कोली और साल्मोनेला जैसे बैक्टीरिया से लड़ने में मदद कर सकते हैं। जब इसे कुचलकर इंफेक्शन पर लगाया जाता है तो यह संक्रमण को ठीक करता है और घावों का इलाज करता है।

3) अजवाइन खांसी से तुरंत राहत देता है। यह बलगम को आसानी से बाहर निकालकर नाक की रुकावट को भी दूर करता है। अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी सांस संबंधी बीमारियों के इलाज के लिए गुड़ के साथ अजवाइन का पाउडर बनाएं और इस मिक्स को दिन में दो बार लें।

4) अजवायन में एनाल्जेसिक और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो जोड़ों और मांसपेशियों के दर्द को कम करने में बेहद फायदेमंद है। इसे खाने से रुमेटीइड गठिया जैसी पुरानी ऑटोइम्यून सूजन संबंधी बीमारियों की संभावना कम हो जाती है, जो वात दोषों के बिगड़ने से होती है।

5) अगर आप ठंड में अजवायन खाते हैं तो कई समस्याओं से निपटने में मदद करता है। इसे खाने के लिए पिसी हुई अजवाइन, घी, बूरा, सोंठ पाउडर को एक साथ मिलाएं और फिर इसे खाएं। इसके अलावा एक गिलास पानी में एक चम्मच अजवायन को उबालें। जब ये पानी आधा रह जाए तो इसे एक कप में छान लें और फिर इसमें एक चुटकी काला नमक डालकर चाय की तरह पीएं।

गर्म कपड़ों में आ रही गंदी बदबू दूर करने के टिप्स

सर्दी के मौसम ने मीठी-मीठी दस्तक दे दी है। अब सुबह-शाम सहलावन सी ठंड शुरू हो गई और इसके साथ ही शुरू हो गई हैं इस मौसम के स्वागत की तैयारियां। बस कुछ ही दिनों में अलमारी और संदूक में भरे रजाई, कम्बल और गर्म कपड़े निकलना शुरू होने वाले हैं। इन सभी को बाहर निकालने के दौरान एक बड़ी ही कॉमन सी समस्या सभी को फेस करनी पड़ती है और वो है इनमें से आने वाली गंदी स्मेल। दरअसल लंबे समय तक स्टोर कर के रखने की वजह से साफ गर्म कपड़ों में भी अजीब सी तीखी गंध आने लगती है। ऐसे में इन गर्म कपड़ों को पहनना जरा मुश्किल होता है। तो चलिए आज आपको कुछ ऐसी घरेलू टिप्स बताते हैं, जिनकी मदद से आप गर्म कपड़ों में उठने वाली बदबू को मिनटों में दूर कर पाएंगी, बिना किसी ड्राइक्लीन या अन्य खर्चे के।

▸▸▸▸ धूप से दूर भगाएं गंदी स्मेल

अगर रजाई, कंबल या गर्म कपड़ों से हल्की-फुल्की सीलन की स्मेल आ रही है, तो इसे दूर भगाने का सबसे बेहतरीन तरीका है कि इसे धूप दिखाई जाए। इसके लिए बस कपड़ों को धूप में डाल दें और दिन भर में तीन से चार बार इन्हें उलटते-पलटते रहें। इससे कपड़े का हर कोना धूप में अच्छे से सिक जाएगा और बिना किसी खर्चे के गर्म कपड़ों से आने वाली गंदी स्मेल दूर हो जाएगी।

▸▸▸▸ कपूर से भी दूर होगी गर्म कपड़ों की गंदी स्मेल

ठंडी के मौसम में अक्सर धूप की कमी हो जाती है। ऐसे में अगर धूप नहीं निकल रही है और गर्म कपड़ों की गंदी स्मेल की वजह से आप इनका इस्तेमाल नहीं कर पा रही हैं, तो आप कपूर की मदद से भी कपड़ों की गंदी स्मेल को दूर कर सकती हैं। इसके लिए बस कपड़ों के बीच में कपूर रखकर छोड़ दें। कुछ ही मिनटों में कपड़ा बिल्कुल फ्रेश हो जाएगा।

व्हाइट विनेगर का करें इस्तेमाल

आप गर्म कपड़ों की गंदी स्मेल को भी व्हाइट विनेगर की मदद से दूर कर सकती हैं। स्मेल कितनी भी तेज हो, इससे दूर हो जाएगी। इसके लिए बस एक स्प्रे बॉटल में व्हाइट विनेगर भर लें और फिर इसे गर्म कपड़ों पर स्प्रे कर दें। इसके बाद कपड़ों को धूप में रख दें। इससे हर कपड़े के बैक्टीरिया भी खत्म हो जाएंगे, साथ ही गंदी स्मेल भी दूर हो जाएगी।

▸▸▸▸ एसेंशियल ऑयल भी है कारगर

गर्म कपड़ों की सीलन भरी बदबू को दूर करने के लिए लौंग, नीम, पिपरमिंट, लैवेंडर जैसे एसेंशियल ऑयल की कुछ बूंदे कपड़े पर डाल कर, खुली जगह में कपड़ों को फैला दें। इससे कपड़ों में नई ताजगी आ जाएगी और गन्दी स्मेल भी मिनटों में छूमंतर हो जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

किसानो को जैविक खेती करने के लिए किया प्रेरित-; किसान संगोष्ठी का आयोजन

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन) दिनांक 19/11/24 को ग्राम उपनी में शिवशक्ति एग्रीटेक लिमिटेड संस्था द्वारा किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया गया। संगोष्ठी में संस्था के कृषि अधिकारी आदित्य देहरी और सहयोगी राजेंद्र कुमार चन्द्रा, सोमनाथ देवांगन के द्वारा रासायनिक खाद से होने वाले नुकसान तथा जैविक खेती से होने वाले फयदे पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया तथा किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया । संगोश्ठी में तुलेश्वर यादव,सेठियार माली,झाडूराम यादव ,तिहार माली ओर अन्य किसान उपस्थित रहे।

पाटसेन्द्री में नेवता भोज का आयोजन

सरायपाली (समय दर्शन)। रायपुर में पदस्थ शाबिहा मेडम ने अपने बेटी के जन्मदिन के अवसर पर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय पाटसेन्द्री के बच्चों को नेवता भोज दिया। शासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शाला पाटसेन्द्री में जे. आर. दानी. गर्ल्स स्कूल रायपुर में पदस्थ शाबिहाअंजुम व्याख्याता द्वारा अपने बेटी अमायरा अली के जन्मदिवस पर आंशिक नेवता भोज दिया। इस नेवता भोज में केला,सेव , मिठाई ,मिक्कर दिया गया। इस नेवता भोज से बच्चों द्वारा खुशी व्यक्त करते हुए शाबिहा अंजुम के बेटी अमायरा अली को जन्मदिन की बधाई देते हुए शुभ आशीर्वाद दिया। प्रधान पाठक चन्द्रभानु पटेल द्वारा भी अपना खुशी व्यक्त करते हुए शाबिहा अंजुम मैडम का पाटसेन्द्री स्कूल के बच्चों के प्रति स्नेह के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापन किया। इस न्योता भोज कार्यक्रम में शासकीय उच्च प्राथमिक शाला पाटसेन्द्री के प्रधान पाठक चंद्रभानु पटेल, शिक्षिका सविता पटेल, शिक्षक संदीप कुमार भोई , नमिता पटेल ,शिक्षक राजेंद्र कुमार निर्मलकर ,शिक्षिका अनुसूया पटेल एवं ममता पाणिग्राही उपस्थित थे।

जिले में श्रमिकों के पलायन पर कड़ी कार्रवाई करने श्रम निरीक्षकों को दिए गए निर्देश

महासमुन्द, (समय दर्शन)। वर्तमान में जिले के श्रमिकों द्वारा अधिक मजदूरी के लिए अन्य राज्यों में पलायन को देखते हुए श्रम पदाधिकारी डी.एन. पात्र ने श्रम निरीक्षकों और श्रम उप निरीक्षकों को जिले के प्रमुख रेलवे स्टेशनों (महासमुंद, बागबाहरा, कोमाखान) और बस स्टैंडों पर सघन निरीक्षण करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने श्रम निरीक्षकों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि जबरन श्रमिकों को ले जाने वाले दलालों और ठेकेदारों के खिलाफकार्रवाई की जाए। इसके तहत ''अन्तर्राज्यीय प्रवासी कर्मकार अधिनियम 1979'' के तहत कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा, निरीक्षकों को पलायन करने वाले श्रमिकों के बारे में नियमित रिपोर्ट तैयार कर कार्यालय में प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी भी दी गई है।

मार्केटिंग में नवनिर्मित दुकान के आबंटन प्रक्रिया को निरस्त करने भाजपा नेता हरिनाथ खूंटे दिया ज्ञापन

सारँगढ़ (समय दर्शन) - भारतीय जनता अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश मंत्री हरि नाथ खूंटे ने सहकारी विपणन समिति मर्या0 सारंगढ़ द्वारा नवनिर्मित पांच गोदाम सह दुकान भवन का किराया अनुबंध प्रक्रिया निरस्त करने के लिए उप पंजीयक को पत्र लिखा जिसमे उल्लेखनीय है की कार्यालय सहकारी विपणन समिति मर्या0 सारंगढ़ जिला सारंगढ़-बिलाईगढ के द्वारा दिनांक 11/11/2024 को कार्यालय परिसर स्थल पर पांच गोदाम सह दुकान भवन (साइज 11म30 वर्ग फीट) को किराया अनुबंध देने के लिए बंद लिफाफा में आवेदन मंगाया गया है, जिसमें नियमों का पालन नहीं किया गया है जिस कारण प्रक्रिया निरस्त करने योग्य है-1. यह कि उक्त दुकान के आबंटन में गंभीर त्रुटी करते हुए संचालक मण्डल के द्वारा अनु0 जाति, अनु0 जनजाति आरक्षण नियम का पालन नही किया गया है न ही कोई पैसा मापदंड बनाया गया है जिससें आरक्षित वर्ग को समानता के साथ व्यवसाय करने का अधिकार हो इस कारण प्रक्रिया निरस्त करने योग्य है।2. यह कि उक्त दुकान आबंटन के लिए प्रबंधक / प्रभारी अधिकारी के द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार नही किया गया है जो कि धनाड्य लोगो के साथ सेटिंग को स्पष्ट करता है।

कलेक्टर ने गुरूर विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों में पहुँचकर जल संचयन के कार्य का किया अवलोकन

आनंदपुर एवं मिर्रीटोला में नहर लाईनिंग एवं खैरवाही में चेकडेम का किया निरीक्षण

किसानों के अंतिम छोर के खेतों तक सिंचाई सुविधा पहुँचाने के उपाय के संबंध में की चर्चा

बालोद (समय दर्शन)। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज गुरूर विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों में पहुँचकर सतही सिंचाई योजना के अंतर्गत किए जा रहे जल संचयन के कार्य का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने ग्राम आनंदपुर एवं मिर्रीटोला में पहुँचकर नहर लाईनिंग के कार्य एवं ग्राम खैरवाही में चोरहा नाला में निर्मित चेकडेम का निरीक्षण कर जल संचयन के कार्यों के संबंध में जानकारी ली। श्री चन्द्रवाल ने ग्राम आनंदपुर मे नहर लाईन का निरीक्षण कर मौके पर उपस्थित महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के सहायक परियोजना अधिकारी श्री ओमप्रकाश साहू से मनरेगा अभिसरण के तहत स्वीकृत इस नहर लाईनिंग के विस्तार के संबंध में जानकारी ली। सहायक परियोजना अधिकारी श्री साहू ने बताया कि इस नहर लाईनिंग के माध्यम से धमतरी जिले के रूद्री नहर से फीडर केनाल के माध्यम से जिन गांवों से नहर लाईनिंग गुजरती है वहाँ किसानों के अंतिम छोर के खेतों तक सिंचाई हेतु पानी पहुँचाने की व्यवस्था की जा रही है। कलेक्टर ने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को इसके लिए जरूरी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। इस दौरान कलेक्टर ने मौके पर उपस्थित ग्राम पंचायत के सरपंच से भी आवश्यक जानकारी ली। इसके अलावा कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने गुरूर विकासखण्ड के ग्राम खैरवाही में पहुँचकर चोराहा नाला में जल संचय हेतु निर्मित चेकडेम का भी निरीक्षण किया। ग्रामीणों ने बताया कि चोराहा में इस चेकडेम के निर्माण होने से हम ग्रामवासियों को निस्तारी एवं सिंचाई हेतु पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो रहा है। इसके अलावा गांव के भू-जल स्तर में भी वृद्धि हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि नाले के किनारे किसानों के द्वारा शाक-सब्जी का भी उत्पादन किया जा रहा है। इसके अलावा बारिश के दौरान किसानों को धान के फसल के लिए पानी की जरूरत होने पर किसान इस नाले का पानी का उपयोग करते हैं। श्री चन्द्रवाल ने मौके पर उपस्थित अधिकारियों एवं ग्रामीणों से इस नाले में आने वाले पानी के स्त्रोत एवं नाले के अंतिम छोर आदि के संबंध में जानकारी ली। ग्रामीणों ने बताया कि इस नाले की कुल लंबाई लगभग 45 कि.मी. है। उन्होंने कहा कि यह नाला ग्राम बासीन में पहुँचकर खारून नदी में मिल जाती है। ग्रामीणों ने बताया कि अपने गांव खैरवाही के इस चोराहा नाला में चेकडेम के निर्माण होने से जब तक चेकडेम में समुचित मात्रा में पानी उपलब्ध रहता है तब तक ग्राम खैरवाही का भू-जल स्तर भी ठीक रहता है। ग्रामीणों ने इस चेकडेम को अपने लिए बहुत ही उपयोगी एवं लाभप्रद बताया।

सफलता की कहानी : जल एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए जिले में अपनाया जा रहा फसल चक्र परिवर्तन

अब तक जिले के 182 गांवों में फसल चक्र परिवर्तन शिविर और 48 गांवों में लगाए गए विशेष शिविर

ब्यूरों सैव्यदा मुनीजा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ देश, प्रदेश सहित जिले में भी गिरते हुए भूजल स्तर को ध्यान में रख जिला प्रशासन द्वारा जल एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें से एक है जल संरक्षण, भूमि की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र परिवर्तन अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करना। जिला प्रशासन द्वारा धमतरी जिले के गांव-गांव में जहां जल संरक्षण के लिए जल जगार महोत्सव आयोजित किया गया, वहीं ग्रीष्मकालीन धान के बदले दलहन, तिलहन और नगदी फसल अपनाने हेतु फसल चक्र परिवर्तन शिविर भी आयोजित किए गए। नतीजन जिले के ग्राम परसतराई, लोहरसी, रांवा, गुजरा, गोहाननाला और बगदेही के ग्रामीणों ने ग्राम विकास समिति की बैठक आहूत कर ग्रीष्मकालीन धान के बदले दलहन, तिलहन और नगदी फसल लेने तथा धान को हतोत्साहित करने का निर्णय लिया।

जिले में कृषि एवं संबंधित विभागों द्वारा अब तक 182 गांवों में फसल चक्र परिवर्तन शिविर आयोजित किए गए, वहीं 48 गांव में विशेष शिविर लगाया गया। इसके साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र (ग्रामीण कृषि कार्य के अनुभव) के माध्यम से 5 गांवों में विशेष गतिविधियां आयोजित की गईं। इनमें लगभग 12 हजार चार सौ से अधिक किसान शामिल हुए और ग्रामीणों को जागरूक किया। इसके अलावा कृषि और उद्यानिकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी गांवों का भ्रमण कर किसानों को दलहन, तिलहन और नगदी फसलों से होने वाले लाभ की जानकारी दी गई। जिले में रबी वर्ष 2024-25 में दलहन, तिलहन की खेती के लिए अब तक 3 हजार 188 क्विंटल 59 किलोग्राम बीज का वितरण किसानों को किया गया। इनमें समिति से एक हजार आठ क्विंटल आठ किलोग्राम, बीजग्राम/प्रदर्शन से एक हजार 874 क्विंटल 51 किलोग्राम और नगद 306 क्विंटल बीज शामिल हैं। जबकि रबी वर्ष 2023-24 में समितियों से 38 क्विंटल 65 किलोग्राम ही दलहन, तिलहन का बीज वितरित किया गया था। इस तरह इस वर्ष रबी फसल के लिए समितियों से दलहन, तिलहन बीज वितरण में इजाफा हुआ है। गौरतलब है कि इस वर्ष जिले की लगभग 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में फसल चक्र अपनाने का लक्ष्य रखा गया है। रबी ऋण वितरण वर्ष 2024-25 के तहत जिले के सभी 11 समितियों के माध्यम से दो हजार 602 सदस्यों को कुल 6 करोड़ 72 लाख 8 हजार रूपये का ऋण वितरण किया गया। इनमें 6 करोड़ 60 लाख 5 हजार रूपये नगद और 12 लाख 3 हजार रूपये सामग्री के तौर पर वितरित किया गया।

खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 : जिले में अब तक 01 लाख 29 हजार क्विंटल से अधिक धान की हुई खरीदी

मुंगेली (समय दर्शन)। शासन के निर्देशानुसार खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में जिले में धान खरीदी कार्य सुचारू रूप से जारी है। कलेक्टर श्री राहुल देव के मार्गदर्शन में जिले के 66 सहकारी समितियों के 105 उपार्जन केन्द्रों में धान बेचने आने वाले किसानों व महिला किसानों के लिए भी पेयजल, छाया सहित अन्य व्यवस्थाएं की गई है। नोडल अधिकारियों द्वारा उपार्जन केन्द्रों की लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। जिले में अब तक कुल 01 लाख 29 हजार 891.20 क्विंटल धान खरीदी की जा चुकी है, जिसमें 01 लाख 03 हजार 83 क्विंटल मोटा, 579.20 क्विंटल पतला और 26 हजार 228.40 क्विंटल सरना धान शामिल है।

किसानों को 28 करोड़ 28 लाख रूपए से अधिक का हुआ भुगतान- मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के मंशानुरूप और कलेक्टर श्री राहुल देव के निर्देशानुसार जिले के सभी उपार्जन केन्द्रों में सुचारू रूप से धान खरीदी की जा रही है। वहीं किसानों को समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के एवज में सहकारी बैंकों के माध्यम से राशि का भुगतान भी किया जा रहा है। जिला सहकारी बैंक के नोडल अधिकारी श्री संतोष कुमार ठाकुर ने बताया कि जिले के 02 हजार 493 किसानों से 01 लाख 22 हजार 972 क्विंटल धान की खरीदी के एवज में अब तक 28 करोड़ 28 लाख रूपए 47 हजार रूपए से अधिक की राशि का भुगतान किया जा चुका है।

किसानों ने उपार्जन केन्द्र के सुविधाओं की सराहना की- उपार्जन केन्द्र में धान बेचने आए ग्राम रोहराखुर्द के किसान श्री ईश्वर सिंह राजपूत ने बताया कि यह उनका पहला टोकन था, जिसमें उन्होंने 125 क्विंटल धान बेचा है। आने वाले दिनों में बाकी बचे टोकन के माध्यम से शेष धान को बेचेंगे। वे 35 से 40 एकड़ खेत में खेती-किसानी करते हैं। उन्होंने उपार्जन केन्द्र में की गई मूलभूत सुविधाओं की सराहना की। इसी तरह उपार्जन केन्द्र दाउपारा में धान बेचने आए ग्राम पेंडाराकापा के किसान श्री नरेन्द्र साहू ने बताया कि 5.2 एकड़ खेत में धान लगाए थे। आज पहले टोकन से 52 क्विंटल धान बेचा है। शेष धान को अगले टोकन के माध्यम से बेचेंगे। उन्होंने उपार्जन केन्द्रों में शासन द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सहित शासन-प्रशासन का धन्यवाद ज्ञापित किया है।

बढ़ते दामो के खिलाफ युवा कांग्रेस ने खोला मोर्चा... मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

सारंगढ़ (समय दर्शन)। जैसे जैसे सरकार का दिन बढ़ता जा रहा वैसे ही विपक्ष सरकार को घेरने लगी है और जिस वादा को कर छत्तीसगढ़ मे भाजपा की सरकार आई अब उसे याद दिलाने सडक पर कांग्रेस दल उतर गई है कांग्रेस नें धरना प्रदर्शन के माध्यम से 2 मुद्दों पर विरोध कर बताया की गृहणियों को 500/- रू. प्रति सिलेंडर उपलब्ध कराने व शराब प्रेमियों के लिए बनाये गय मनपसंद ऐप की तरह शिक्षा प्रेमियों के लिए शिक्षा सुधार हेतु शिक्षा ऐप बनाने के संबंध में युवा कांग्रेस ने मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम को ज्ञापन सौपा आवेदन में प्रेषित कर रहे है जिसमें जनहितों को ध्यान में रखते हुए उक्त मांगो को जल्द से जल्द पूर्ण करने के लिए युवा कांग्रेस ने भारत माता चौक के सामने धरना कर सरकार के खिलाफ धरना प्रदर्शन कर रैली निकाला गया शहर मे घूम घूम कर सरकार ने चुनाव में वादा किया था अगर सरकार बनती है तो हम गृहणियों को 500/-रू. सिलेण्डर उपलब्ध कराएगें। चूँकि सरकार बने आज लगभग 1 वर्ष पूर्ण होने को है लेकिन अब तक सिलेंडर 500 रुपये मे नहीं मिल रहा ये छत्तीसगढ़ की जनता के साथ दोखा है उनको लालच देकर वोट बैक की राजनीती किया गया इसलिए हम चाहते है कि सरकार अपना वादा निभाते हुए 500/- प्रति सिलेंडर गृहणियों को देने को दने का काम करें। दूसरी बात आपकी सरकार ने शराब प्रेमियों के लिए मनपसंद ऐप लॉच किया गया जिससे शराब प्रेमियों घर बैठे अपनी मनपसंद शराब पा सकते है। लेकिन छत्तीसगढ़ मे शिक्षा और उससे जुड़े व्यबस्था पर कोई चिंता नहीं कर रही हम चाहते है कि इसी तरह शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु भी एक ऐप लाया जाये जिससे स्कूल में शिक्षकों की कमी, बिल्डिंग की कमी, किताबों की कमी इन माध्यमों से दूर की जा सके

रेडक्रॉस सोसाइटी के जिला इकाई गठन प्रक्रिया में शामिल हुए सदस्यगण

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन) / भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी के सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले की प्रबंध समिति के गठन हेतु जिला शाखा के सामान्य सभा की बैठक खेलभाठा मैदान के पास जिला पंचायत संसाधन केंद्र, परियोजना निदेशक कार्यालय सारंगढ़ में आयोजित किया गया। भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी के सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के सभी संरक्षक, वाइस संरक्षक और सदस्यगण इस बैठक में बड़ी संख्या में शामिल हुए। कलेक्टर धर्मेश साहू ने इस अवसर पर कहा कि आपदा के समय राहत कार्य का संचालन इस संस्था के माध्यम से किया जाता है। कई देशों और स्थानों में रेडक्रास समिति ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही शांति व्यवस्था शिक्षा और स्वास्थ्य के बेहतरीन के लिए रेट का समिति ने अच्छा कार्य किया है और निरंतर अच्छे कार्य कर सकती है। कलेक्टर धर्मेश साहू ने सभी नागरिकों, कॉलेज और स्कूली छात्र - छात्राओं सहित सभी वर्गों से अपील किया है कि, अपने स्तर पर रेडक्रॉस सोसाइटी के सदस्य बने और इस लोक कल्याणकारी संस्था में शामिल होकर जनहित में कार्य करें। कार्यक्रम की शुरुआत में पदेन सचिव सह सीएमएचओ डॉ एफ आर निराला ने रेडक्रॉस सोसाइटी के स्थापना और कार्य के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि रेड क्रॉस एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जिसका कार्य आपदाओं और आपातकाल के समय राहत प्रदान करना है। इसके साथ ही कमजोर लोगों व समुदायों के स्वास्थ्य और देखभाल को बढ़ावा देना है। यह दुनिया के सबसे बड़े स्वतंत्र मानवतावादी संगठन है। सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले में रेडक्रॉस सोसाइटी के जिला प्रबंध समिति के गठन प्रक्रिया में अब्बास अली, हरिशंकर चौहान, मीना अग्रवाल, अरुण गुड्डू यादव, महेंद्र अग्रवाल, मोहन नायक, नंदकिशोर अग्रवाल, दीपक थवाईत, जे एन शुक्ला, संतोष अग्रवाल, रतन शर्मा, प्रखर चंद्राकर, कैज़र हुसैन गोविंद बरेठा आदि सदस्य शामिल हुए।

कृषि स्नातक उपाधि धारक छात्रों एवं कर्मचारियों के सम्मान में सौंपा ज्ञापन

पाटन (समय दर्शन)। कृषि के क्षेत्र में शासकीय, अर्ध शासकीय एवं गैर शासकीय संस्थाओं के अधीनस्थ कार्य कर रहे हैं कृषि और संबद्ध विषयों के स्नातक उपाधि धारक एवं छात्र हित में कृषि एवं सम्बध्द विषयों के पाठयक्रम को व्यवसायिक पाठ्यक्रम घोषित करने हेतु छत्तीसगढ़ के कृषि विभाग के सबसे बड़े कर्मचारी संघठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री लिखेश कुमार वर्मा जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के दोनों कृषि एवं उद्यानिकी विश्वविद्यालय में ज्ञापन सौंपा गया।

छत्तीसगढ़ की बड़ी जनसंख्या कृषि एवं संबंधित उद्यम जैसे उद्यानिकी, वानिकी, पशुपालन, रेशम पालन, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि पर आधारित है, साथ ही छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा भी कहा जाता है परन्तु छत्तीसगढ़ में अभी तक कृषि एवं संबद्ध विषयों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम घोषित नहीं किया गया हैं जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि एवं संबद्ध विषयों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम के रूप में वर्ष 2016 में मान्यता दी हैं एवं भारत सरकार द्वारा वर्ष 1986, 2017 और 2018 में लगातार भारत के सभी कृषि विश्वविद्यालयों को एवं सभी राज्यों के प्रमुख सचिव कृषि, कृषि उत्पादन आयुक्त, संचालक कृषि, संचालक उद्यानिकी, संचालक समेती को इस हेतु आवश्यक कार्रवाई करने को निर्देशित किया गया था।

छत्तीसगढ़ कृषि स्नातक शासकीय कृषि अधिकारी संघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष श्री लिखेश कुमार वर्मा जी, प्रांतीय महामंत्री श्री मोहित जैन जी, प्रांतीय सचिव श्री राजू दास जी, विश्वविद्यालय के पीएचडी के छात्र श्री किशन कुमार राज, श्री दीपपाल जांगडे , श्री घनश्याम जी आदि के प्रतिनिधि मंडल ने कृषि एवं संबद्ध विषय के स्नातक उपाधि को व्यवसायिक पाठ्यक्रम (प्रोफेशनल डिग्री) घोषित करने हेतु छत्तीसगढ़ में स्थित कृषि संबंधी दोनों विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपति श्री गिरीश चंदेल जी, इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर एवं मान. श्री आर. एल. खरे जी, कुलसचिव, महात्मा गाँधी उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सांकरा, दुर्ग को दिनांक 19 नवंबर को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन सौंपते हुए विस्तृत चर्चा में प्रतिनिधि मंडल ने विश्वविद्यालय को अवगत कराया की भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं भारत शासन के घोषित करने के बाद भी अभी तक छत्तीसगढ़ में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि एवं सम्बध्द विषयो को व्यावसायिक पाठ्यक्रम घोषित नहीं किया गया।

दोनों ही विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिनिधिमण्डल को आश्वस्त कराया गया कि उनकी मांग के संबंध में शीघ्र सकारात्मक कार्यवाही की जाएगी।

श्री लिखेश वर्मा जी के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम घोषित होने से कृषि, उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी, दुग्ध प्रौद्योगिकी, वानिकी, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान, खाद्य विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, मछली पालन, रेशम पालन, गृह/सामुदायिक विज्ञान एवं फूड न्यूट्रिशन एंड डायटेटिक्स पाठयक्रम के वर्तमान छात्रों के साथ साथ उक्त स्नातक उपाधि धारकों को भी लाभ होगा।

खबर-खास

सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी ने प्रधानमंत्री आवास के 20 हितग्राहियों को सौंपी चाबी

गरियाबंद (समय दर्शन)। महासुमंद लोकसभा क्षेत्र की सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी बुधवार 20 नवम्बर को आवास दिवस के अवसर पर जिला पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत जिले के विभिन्न ग्रामों के 20 हितग्राहियों को पक्के आवास की चाबी सौंपकर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी।उल्लेखनीय है कि इस योजना से ज़रूरतमंद लोगों को खुद का घर मिल रहा है। हितग्राहियों को पी.एम.आवास योजना से पक्के घर का सपना पूरा हो रहा है।हितग्राहियों ने बताया कि वे पहले मिट्टी और खपरैल वाले घर में रहते थे।इस कारण बरसात के दिनों में घर के अंदर पानी टपकने की समस्या रहती थी और ज़मीन भी गिला होने से फिसल के गिरने आदि डर रहता था।लेकिन प्रधानमंत्री आवास योजना से अच्छे और सुरक्षित जगह रहने का सहारा मिलेगा है। इस योजना से मुझे बहुत सी समस्याओं से मुक्ति मिली है। उन्होंने उत्साहपूर्वक बताया कि खुद का पक्का घर बन जाने से अब बहुत बड़ी चिंता से मुक्ति मिली है। इसी तरह राज्य स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) द्वारा जारी दिशा निर्देशों के तहत जिले में विश्व शौचालय दिवस 19 नवम्बर से प्रारंभ होकर 10 दिसम्बर मानव अधिकार दिवस तक ''हमर शौचालय-हमर सम्मान'' अभियान चलाया जा रहा है। सांसद श्रीमती चौधरी ने स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत 5 हितग्राहियों को व्यक्तिगत शौचालय का प्राशसकीय स्वीकृति आदेश पत्र प्रदाय किया।इस अवसर पर कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल,पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा,सीईओ रीता यादव सहित संबंधित अधिकारी एवं हितग्राही उपस्थित थे।

गस्त के दौरान नक्सल मोर्चे पर मिली सफलता एक सिंगल शॉट रायफल के साथ अन्य नक्सल सामग्री बरामद

गरियाबंद (समय दर्शन)। जिले में पुलिस विभाग को एक और बड़ी सफलता मिली जिसमें नक्सलियों के सामान सहित एक सिंगल शॉट रायफल,नक्सल साहित्य और अन्य समाग्रियां बरामद किया गया। घटना के विषय में मिली जानकारी के अनुसार गुरुवार को नक्सली उपस्थिति की आसूचना पर वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में गरियाबंद डी.आर.जी.,कोबरा-207वाहि,ओडिसा स्हल (नुआपाडा एवं नवरंगपुर),सी.आर.पी.एफ-211वाहि 65वाहि की संयुक्त टीम गस्त हेतु थाना जुगाड़ क्षेत्रातंर्गत अमाढ़ जंगल की ओर निकली थी।आज सुबह लगभग 7 बजे सर्चिंग के दौरान नक्सलियों द्वारा पुलिस पार्टी को अपनी ओर आते देख फायरिंग की गयी।जवाबी कार्यवाही करते हुए पुलिस पार्टी द्वारा आत्मरक्षा हेतु फायरिंग किया गया।पुलिस पार्टी को भारी पडते देख नक्सली अपने डेरा छोड भाग गये।सर्चिंग के दौरान घटना स्थल का निरीक्षण करने पर नक्सलियों का एक सिंगल शॉट रायफल,नक्सल साहित्य अन्य समाग्रियां बरामद किया गया।सर्चिंग पश्चात् सभी पुलिस बल सकुशल अपने-अपने ईकाई की ओर वापस लौट गए हैं।

जिला बनने के बाद पहली बार गठित जिला पशु कल्याण एवं पशु क्रूरता निवारण समिति की बैठक

गरियाबंद (समय दर्शन)। जिला बनने के बाद पहली बार गठित जिला पशु कल्याण एवं पशु क्रूरता निवारण समिति की विगत दिवस पहली बैठक आयोजित हुई।कलेक्टर दीपक अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में पशु कल्याण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई।साथ ही समिति में जरूरी सदस्यों को शामिल करने एवं पशु कल्याण की दिशा में सकारात्मक कार्य करने के निर्देश दिए गए। समिति की बैठक में पशुओं के इलाज एवं विभिन्न सेवाओं के लिए संभावित दर को अनुमोदन के लिए रखा गया।कलेक्टर श्री अग्रवाल ने बड़े एवं छोटे पशुओं के पंजीयन शुल्क,रेबीज टीकाकरण,गर्भ,परीक्षण गर्भाशय में दवाई डालने सहित लघु एवं दीर्घ शल्य क्रिया के लिए प्रस्तावित शुल्क की जानकारी ली।साथ ही बड़े एवं छोटे पशुओं को स्वास्थ्य प्रमाण पत्र जारी करने के शुल्क के भी प्रस्ताव की जानकारी ली।उन्होंने लोगों की सुविधा एवं पशु कल्याण को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार शुल्क निर्धारित करने के निर्देश दिए। इस दौरान बैठक में पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा, वनमंडलाधिकारी लक्ष्मण सिंह,उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं ओपी तिवारी सहित पशु चिकित्सक एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

बैठक में उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं ने जिला पशु कल्याण समिति एवं पशु क्रूरता निवारण समिति के बैठक के एजेंडा के संबंध में जानकारी दी।उन्होंने समिति में जिले में पदस्थ विभागीय संस्थाओं के राजपत्रित अधिकारियों को समिति के पदेन सदस्य नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा।साथ ही पशु चिकित्सालय को 50 हजार रुपए से अधिक दान देने वाले व्यक्ति एवं जनप्रतिनिधियों को भी समिति में सदस्य नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा। उप संचालक ने बताया कि जिले में पशु कल्याण एवं पशु क्रूरता निवारण समिति का गठन पशुओं के कल्याण के लिए की गई है।समिति का उद्देश्य पशुओं के प्रति क्रूरता करने वाले व्यक्तियों पर निगरानी करने,उन्हे सचेत करने तथा आवश्यकता हुई तो सजा दिलाने हेतु कार्यवाही की दिशा में कार्य करना है।इसके अलावा पशुओं के चिकित्सा हेतु प्रबंध,बुढापे एवं अन्य किसी प्रकार से कार्य के आयोग्य पशुओं के लिये सदन बनाना एवं संस्कृति एवं सभ्यता के उत्थान में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों से पशुओं के प्रति किसी प्रकार के क्रूर दुर्व्यवहार के संबंध में सूचना एवं सुझाव आमंत्रित करना भी उद्देश्य है।साथ ही विद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं की पाठ्य पुस्तकों में पशुओं के प्रति बच्चों एवं युवाओं से मानवता एवं प्रेम भावना उत्पन्न करने कार्य करना एवं ऐसे पाठ रखवाना, पशुओं के प्रति हिंसा एवं क्रूरता के विरूद्ध व्यापक प्रचार प्रसार,मांसाहार के विरूद्ध व्यापक प्रचार एवं अन्य कानूनों के अंतर्गत पशुओं की हिंसा से संबंधित धाराओं का पालन करवाना भी समिति के उद्देश्य में शामिल है।

खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 : फर्जी तरीके से धान बिक्री करते पाए जाने पर संबंधित के विरूद्ध की गई कार्यवाही

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी के निर्देश पर जिले में अवैध धान भण्डारण और परिवहन पर दल द्वारा लगातार निगाह रखी जा रही है। इसी कड़ी में आज प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति तरसींवा के उपार्जन केन्द्र तरसींवा में गठित निगरानी समिति से प्राप्त सूचना के आधार पर खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया गया। इस दौरान धान उपार्जन केन्द्र तरसींवा में किसान गोपीचंद साहू द्वारा लाए गए धान का परीक्षण किया गया, जिसमें मिक्स किस्म का पुराना धान लाना पाया गया। मौके पर उपस्थित पंचों के समक्ष जांच में किसान गोपीचंद ने अपने स्वैच्छिक कथन में बताया कि उनका ग्राम रांवा में कुल 6 खसरों में 1.75 हेक्टे. कृषि भूमि है, जिसका पंजीयन उपार्जन केन्द्र तरसींवा में किया गया है। उपस्थित ग्रामीणों के समक्ष खाद्य विभाग के अधिकारियों एवं समिति के सदस्यों द्वारा किसान के सभी

खसरों का मुआयना किया गया, जिसमें सिर्फ एक खसरे (984/1) रकबा 0.73 हेक्टे. पर ही धान की कटाई एवं मिंजाई होना पाया गया तथा शेष खसरों पर खेत में धान होना पाया गया। इस तरह कृषक के खसरा क्रमांक 984/1 रकबा 0.73 हेक्टे. में धान बेचने की पात्रता 38.32 क्विंटल की है। चूंकि 21 नवम्बर को जारी टोकन में 90.80 क्विंटल धान का विक्रय किया जाना था। खाद्य अधिकारी ने बताया कि किसान गोपीचंद द्वारा ग्राम रांवा के धान कोचिया श्री देवेन्द्र कुमार के साथ मिलीभगत कर शेष धान की मात्रा 52.48 क्विंटल (मिक्स किस्म का पुराना धान)को उपार्जन केन्द्र में लाकर खपाने की कोशिश की गई। इस प्रकार धान कोचिया के धान को किसान गोपीचंद साहू द्वारा अपने टोकन में फर्जी तरीके से बिक्री करते पाए जाने पर बिक्री हेतु लाए गए 90.80 क्विंटल धान को उपार्जन केन्द्र तरसींवा में गठित निगरानी समिति के सदस्यों द्वारा जब्ती की कार्यवाही की गई। कार्यवाही में खाद्य विभाग एवं उपार्जन केन्द्र तरसींवा में गठित निगरानी समिति के सदस्य श्रीमती बसंती नेताम, श्रीमती चंद्रकला साहू, श्री विकास कुमार साहू, श्रीमती तोषी भूआर्य उपस्थित रहे।

सायबर सेल तकनीकी एवं थाना सिटी कोतवाली धमतरी, जिला धमतरी की संयुक्त कार्यवाही

धमतरी के राधाकृष्ण ज्वेलरी दुकान में हुये चोरी का हुआ खुलासा

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़।। गौरतलब है कि, दिनांक 08.11.24 को रात्रि 08:00 बजे प्रार्थी प्रवीण वर्मा पिता राधेश्याम वर्मा साकिन नयापारा वार्ड धमतरी जो रिसाईपारा धमतरी स्थित अपने ज्वेलरी दुकान का ताला बंद कर अपने घर चला गया था। रात्रि करीबन 03:20 बजे प्रार्थी को फोन के माध्यम से दुकान का शटर आधा खुला होने की सूचना मिलने घर प्रार्थी दुकान आकर देखा तो शटर आधा खुला हुआ था अंदर जाकर देखा तो ज्वेलरी सामान ईधर-उधर चिखरा पड़ा था।

दुकान में रखे चांदी का जेवरात, बैटेक्स के सामान एवं नगदी रकम 17000/- रूपया कुल जुमला 95000/- रूपये नही था जिसे कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले जाने की रिपोर्ट पर थाना सिटी कोतवाली धमतरी में अपराध क्र. 438/2024 धारा 305 (ए), 331 (4) बीएनएस कायम कर विवेचना में लिया गया। जिले के ग्रामीण/शहरी क्षेत्रों में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं को देखते हुए पुलिस अधीक्षक महोदय श्री आंजनेय वार्ष्णेय द्वारा चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं अज्ञात आरोपी की पतासाजी कर आरोपी को पकड़ने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये जिस पर अति. पुलिस अधीक्षक श्री मणीशंकर चन्द्रा,उप पुलिस अधीक्षक सुश्री नेहा पवार के मार्गदर्शन में सायबर सेल तकनीकी एवं थाना सिटीकोतवाली धमतरी की संयुक्त टीम द्वारा आरोपियों की पतासाजी की जा रही थी। विवेचना के दौरान सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी साक्ष्य एवं मुखबीर लगाकर अज्ञात आरोपी की पतासाजी की जा रही थी, दिनांक 20.11.24 को मूखबीर सूचना के आधार पर बस स्टेण्ड धमतरी के पास संदेही आरोपी अमन उर्फ आर्मी चौहान पिता सुरेन्द्र चौहान उम्र 23 साल साकिन पंचधार थाना सरिया जिला रायगढ़ को पकड़कर पुछताछ करने पर बताया की दिनांक 08.11.24 के दरम्यानी रात्रि में राधेकृष्ण ज्वेलरी दुकान रिसाईपारा धमतरी के शटर का ताला तोड़कर दुकान अंदर प्रवेश कर दुकान में रखे चांदी के जेवरात, बैटेक्स आभूषण एवं नगदी रकम 17000/- रूपये को चोरी करना स्वीकार किये। आरोपी के कब्जे से चांदी के जेवरात, बैटेक्स आभूषण कुल जुमला कीमती 373640/- रूपये को बरामद किया गया। आरोपी को थाना सिटीकोतवाली धमतरी के अपराध धारा के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा जा रहा है।

सफलता की कहानी : काफी खुश हूं कि मुझे एक दिन का अधिकारी बनने का मौका मिला

शेडो जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग कुमारी मौरवी किरण ने व्यक्त किए अपने विचार

अपने गांव के जरूरतमंद परिवार को स्पॉन्सरशिप योजना की मौरवी ने दी जानकारी

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी के अभिनव प्रयास से बीते दिन जिले के हाई एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल के 202 विद्यार्थियों ने कलेक्टोरेट सहित विभिन्न कार्यालयों का संबंधित अधिकारियों के साथ भ्रमण कर शेडो अधिकारी की भूमिका निभाए। इस दौरान बच्चों ने उत्सुकता से कार्यालयों में किए जाने वाले कार्य, अधिकारी, कर्मचारियों की दिनचर्या, योजनाओं का मैदानी स्तर पर क्रियान्वयन सहित विभिन्न कार्यक्रमों को करीब से जाना और समझा। इस अभिनव पहल के लिए बच्चों ने जिला प्रशासन का धन्यवाद ज्ञापित किया और आगे भी ऐसे आयोजन संचालित होते रहें, जिससे अन्य विद्यार्थियों को भी मौका मिले, ऐसी अपेक्षा कलेक्टर के समक्ष रखीं।

शेडो जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग के तौर पर भूमिका निभाने वाली शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल बारना की कक्षा बारहवीं की विद्यार्थी कुमारी मौरवी किरण काफी संवेदनशील और जिज्ञासु प्रवृत्ति की है, वह शासकीय कार्यक्रमों एवं योजनाओं को गंभीरतापूर्वक जाना और समझा तथा इनसे प्रभावित भी हुई। कुमारी मौरवी ने जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती जगरानी एक्का के साथ उनके कार्यालय में बैठकर कार्यालयीन कार्यों, योजनाओं से लाभान्वितों, आंगनबाड़ी में दी जाने वाली सुविधाओं, बालकों हेतु संचालित बालगृह, चाईल्ड हेल्पलाईन, बाल कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड सहित कार्यालय में संधारित विभिन्न पंजीयों के बारे में विस्तार से जानकारी ली।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक निर्माण विभाग दुर्ग संभाग, दुर्ग

// मैनुअल पद्धति निविदा सूचना //

ज्ञाप क्रमांक -10147 / व.ले.लि./ लेखा खण्ड/2024-25 — दुर्ग, दिनांक 20/11/2024

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य 'हेतु प्रमुख अभियंता, लो.नि.वि. रायपुर द्वारा जारी भवन / सड़क SOR दिनांक 01.01.2015 तथा निविदा तिथि तक जारी संशोधन के अंतर्गत मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि :- 05/12/2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा प्रपत्र जारी करने की अंतिम तिथि :- 06/12/2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
ठेकेदारों द्वारा प्रस्तुत निविदायें प्राप्त करने की अंतिम तिथि :- 12/12/2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि :- 13/12/2024 पूर्वान्हे 11.30 बजे तक

एनआईटी क्र. निविदा क्र.	कार्य का नाम / NoOfCalls	कार्य की अनुमानित लागत (रू. लाख में)
1	2	3
5 T0028	कलेक्ट्रेट बंगला में अतिरिक्त बाउण्ड्रीवाल का निर्माण कार्य (प्रथम आमंत्रण)	8.52
5 T0029	शासकीय उदय प्रसाद उदय पोलीटेकनिक परिसर दुर्ग जमा कार्य (प्रथम आमंत्रण)	12.31

☐ General Condition ☐ Plant Condition ☐ Special Condition

नोट :- 1. 'It is mandatory for the 'B', 'C' & 'D' Class bidders, to submit (Annexure 3, Annexure-'2'.
2. It is Mandatory for the 'A' Class bidder, to Submit affidavit (Annexure 3, Appendix 1, Annexure 1,2.
3. अन्य निविदा संबंधी शर्तें विभागीय वेबसाईट www.cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत निविदा प्रपत्र में उपलब्ध है। एवं अन्य निविदा संबंधी शर्तों का अवलोकन संबंधित संभाग कार्यालय में किया जा सकता है।

जी- 242503966/1

कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग दुर्ग संभाग दुर्ग

कार्यालय कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय खण्ड बेमेतरा (छ.ग.)

:: ई-प्रोक्योरमेंट द्वितीय निविदा सूचना ::

ऑनलाईन निविदाएं प्रपत्र-ए में प्रतिशत दर पर अनुबंध हेतु नीचे उल्लेखित कार्य के लिये छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से अधोहस्ताक्षरकर्त्ता के कार्यालय में एकीकृत पंजीयन व्यवस्था में **श्रेणी-डी** एवं उच्च श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम - जल जीवन मिशन अंतर्गत विकासखंड बेमेतरा एवं नवागढ़ के विभिन्न ग्रामों में 150 मि.मी. व्यास के 120 मीटर गहरे नलकूप खनन कर हैण्डपम्प स्थापना का कार्य दिये गये शेड्यूल अनुसार।

स. क्र.	सिस्टम नम्बर	निविदा सू.क्र.	ग्राम का नाम	अनुमानित लागत
1	161388	43	Drilling of 13 nos Nos. Tube well At villages (Baradera, Nari, Pandarbhatha, Majgaon, Gunarbod, Jhal, Kusmi) in Block Bemetara.	15.40
2	161392	44	Drilling of 22 nos Nos. Tube well At villages (Pratappur, Dhobanikala, Dhaurabhathakhud, Boirkachara, Baghuli, Nandal, Turasemariya, Buchipur, Khapri, Jewara (N), Barbaspur, Chaklakunda, Nawagaon) in Block Nawagarh.	26.06

1. बिड प्रारंभ की तिथि - 21.11.2024
2. बिड सबमिशन की अंतिम तिथि - 27.11.2024

उपरोक्त कार्यो की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल **http://eproc.cgstate.gov.in** में दिनांक **21.11.2024** से देखे जा सकते है।

G- 242503908/1

कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बेमेतरा (छ.ग.)

नाम परिवर्तन

मैं पिंकी साहू पति धनेश साहू निवासी वार्ड नं. 23, नया दुर्गा मंदिर, संत रवि दास नगर, केम्प 2 भिलाई तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. , मेरे पुत्र के नाम से जारी भारत सरकार आधार कार्ड नं. 7866, 0640 1306 में उसका नाम नुपूर साहू (NUPUR SAHU) पिता धनेश साहू (DHANESH SAHU) अंकित है। मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में पुत्र का नाम अनुराग साहू (ANURAG SAHU) पिता धनेश साहू (DHANESH SAHU) अंकित है। मेरे पुत्र की जन्मतिथि 02/11/2016 है जो शा. नवीन प्राथ. शाला केम्प-02 भिलाई तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. में कक्षा तीसरी में अध्ययनरत है जिसके अंकसूची में पुत्र का नाम अनुराग साहू (ANURAG SAHU) पिता धनेश साहू (DHANESH SAHU) अंकित है।

मेरे पुत्र सही व वास्तविक नाम अनुराग साहू (ANURAG SAHU) पिता घनेश साहू (DHANESH SAHU) के नाम से गजट प्रकाशन करवाने इसी आधार पर मेरे पुत्र के आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजो में अंकित करवाने के समर्थन में यह शपथ पत्र प्रस्तुत है।

शपथकर्ता

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

// उदघोषणा //
रा0प्र0क0/202411103000046
अ-6 वर्ष 2024 2025

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक :- सूर्यभान पांडे पिता बृजभूषण पांडे निवासी- सिविक सेक्टर भिलाई तह0 व जिला दुर्ग के द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है कि मौजा- उमरपोटी प.ह.नं. 52 स्थित भूमि खसरा नंबर 312/56 रकबा 0.020 हे0 भूमि वर्तमान राजस्व अभिलेख में बृजभूषण पाण्डेय पिता स्व. रामनरेश पाण्डेय नाम से दर्ज है। पिता स्व. बृजभूषण पाण्डेय पिता स्व. रामनरेश पाण्डेय की मृत्यु दिनांक 29/07/2024 को हो चुका है। पिता स्व. बृजभूषण पाण्डेय पिता स्व. रामनरेश पाण्डेय के मृत्यु उपरांत उनके वारिसान :- सूर्यभान पांडे पिता बृजभूषण पांडे (पुत्र), भानमती पति बृजभूषण पांडे (पुत्री) का नाम दर्ज किये जाने फौती नामांतरण आवेदन न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 11/12/24 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा ।

आज दिनांक18/11/24 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

// न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.)//

// ईश्तहार //
राजस्व प्रकरण क्रमांक
अ/6-अ 2023-2024

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक श्रीमती बिसमिल्ला बेगम ध.प.अकबर हुसैन साकिन सुन्दर विहार कालोनी कुरूद द्वारा ग्राम करूद प.ह.न. 46 तहसील व जिला दुर्ग में उसके नाम पर भूमि ख.न. 1420/318 रकबा 0.003 हे. को रजिस्टर्ड बैनामा के माध्यम से क्रय किया था, जिसका नामान्तरण पश्चात ऋण पुस्तिका प्राप्त हो गया था, परन्तु वर्तमान अभिलेख में मेसर्स वेद प्रकाश चोपड़ा विका एंड कंपनी कुरूद भागीदार आलोक कुमार लुनिया को सुधार किये जाने के संबंध में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है.जिस पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अत: उपरोक्त भूमि की श्रीमती बिसमिल्ला बेगम / अकबर हुसैन सुधार किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 16/12/2024 तक या उसके पूर्व स्वय या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

आज दिनांक 19/11/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) मैनपुर जिला गरियाबंद (छ.ग.)

// ईश्तहार //
रा.प्र.क्र. 202411221800039
अ-2/2024-2025
ग्राम गौरघाट, तहसील-मैनपुर, जिला गरियाबंद (छ.ग.)

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री जनक राम ध्रुव पिता श्री अभे राम ध्रुव जाति गोंड़, निवासी ग्राम नहानबिरी, प.ह.नं. 03. तहसील मैनपुर, जिला गरियाबंद (छ.ग.) के द्वारा ग्राम गौरघाट, प.ह.नं. 02, तहसील मैनपुर, जिला गरियाबंद (छ.ग.) स्थित भूमि खसरा नंबर 17 रकबा 0.35 हे. भूमि को छ.ग. भू-राजस्व संहिता की धारा 1959 की धारा 172 के तहत् व्यवसायिक प्रयोजन हेतु व्यपवर्तन निर्धारण कराने बाबत नक्शा, खसरा, बी-1 एवं अन्य दस्तावेजों सहित आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति / संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो वे स्वयं या विधिक अधिकारिता रखने वाले अपने अभिभाषक (अधिवक्ता) के माध्यम से ईश्तहार प्रकाशन के 15 दिवस के भीतर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिवस के पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति कर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 21/11/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं इस न्यायालय के पद मुद्रा सहित जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी (रा) मैनपुर

संक्षिप्त-खबर

दुर्ग जिला ग्रामीण से पांच खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता के लिए..

दुर्ग (समय दर्शन)। जिला दूर्ग में संचालित खेलों इंडिया लघु केंद्र मर्रा पाटन से जूनियर वर्ग में बालक एवं बालिका वर्ग से कु.गणेश्वरी सपहा, कु. जिज्ञासा यादव, कु. ऐश्वर्या यादव, कु.जानवी नेताम एवं खुमान साहू का चयन राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता के लिए हुआ है। जिसे राज्य कबड्?डी संघ द्वारा 22 से 24 नवम्बर 2024 को जिला कवर्धा में आयोजित प्रतियोगिता मे भाग लेंगे। उक्त राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के लिए जिले का दल आज गुरुवार को कवर्धा के लिए प्रस्थान किया हैं। पूरे दल का प्रशिक्षक भरतलाल ताम्रकार एवं संतोष कुमार यादव पी.टी. आई मर्रा के द्वारा विदाई दी गई तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की हैं।

बर्खास्त कर्मचारियों को बहाल किया जिला अधिकारी ने

दुर्ग (समय दर्शन)। दुर्ग जिला चिकित्सालय में बुधवार को जीवन दीप समिति की बैठक हुई,। जिसमे पूर्व में जिला चिकित्सालय में डेटा ऑपरेटरों के साथ बैठक हुई इस बैठक में एक माह पूर्व दो डेटा ऑपरेटरों को श्रीमती स्मिता तिवारी एवीएन श्रीमती दुर्गा प्रस्तुति जो डेटा एंट्री ऑपरेटर पैड प्रति 10-7 -2014 से जिला चिकित्सालय दुर्ग में कार्यरत थी उनको सेवा से बर बरखास्त कर दिया गया था इसको लेकर स्वास्थ्य एवीएन बहुदेशी कर्मचारी संघ के कार्यकर्ता प्रांत अध्यक्ष वी एस राव ने कलेक्टर मैडम को दिया निर्देश सौप कर तत्काल मुफ्त आदेश को शीघ्र निरस्त करने की विनती की और भविष्य में हमारे कर्मचारी लेट नहीं आएंगे इसका वचन देते हैं टैब कलेक्टर सुश्री ऋचा चौधरी ने तत्काल कर्मचारियों को बर्खास्तगी से बहाल करने का आदेश जारी करने हेतु दिशा निर्देश दिए जिसे सभी कर्मचारियों में खुशी व्याप्त हो गई इस बैठक में प्रमुख रूप से कलेक्टर मैडम के साथ मुख्य चिकित्सा एवीएन स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज दानी सिविल सर्जन डॉक्टर हेमंत साहू एवं एवीएन जीवनदीप समिति के सभी सदस्य मौजूद थे।

बागबाहरा अनुभाग में एसडीएम उमेश साहू के नेतृत्व में एक ही दिन में 1590 कट्टा धान की जब्ती

महासमुन्द, (समय दर्शन)। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह के निर्देशन में जिले में धान के अवैध परिवहन, भंडारण पर सतत कार्यवाही जारी है। आज उमेश कुमार साहू एसडीएम बागबाहरा के नेतृत्व में तीन अलग-अलग स्थानों से एक ही दिन में कुल 1590 कट्टा धान की ज़ब्ती की कार्यवाही की गई। उन्होंने बताया कि बागबाहरा अनुभाग के तहसील कोमाखान के ग्राम भिलाईदादर में सिन्हा किराना स्टोर्स में 1120 कट्टा अवैध धान प्रशासन ने जब्त किया गया। इस कार्यवाही में मंडी सचिव कुशल राम ध्रुव, मंडी इंस्पेक्टर हल्का पटवारी श्रीमती पूजा साहू शामिल थे। वहीं इस अभियान में ही अनुभाग बागबाहरा के तहसील कोमाखान में ग्राम टेमरी साहू एसडीएम बागबाहरा उमेश साहू के नेतृत्व में 170 कट्टा अवैध धान जब्ती की कार्यवाही की गई, जिसमें हल्का पटवारी टोप सिंह ध्रुव, नंद कुमार सिदार मंडी उप निरीक्षक उपस्थित रहे। अनुभाग बागबाहरा के तहसील कोमाखान के ग्राम बोईरगांव में हल्का पटवारी क्रांति कुमार यादव द्वारा 300 कट्टा अवैध धान की जब्ती की कार्यवाही की गई। इस प्रकार आज एक ही दिन में कुल 1590 कट्टा धान की ज़ब्ती की कार्यवाही की गई। उन्होंने बताया कि इस तरह की कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

छग जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन के पत्रकारों ने क्रिकेट प्रतियोगिता का किया शुभारंभ

पिथौरा (समय दर्शन)। स्व. प्रकाश श्रीवास्तव की स्मृति में जिला स्तरीय टी 20 ड्यूस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 16 से 23 नवंबर सात दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट पिथौरा नगर के शहीद भगत सिंह खेल मैदान में आयोजित किया गया है। जिसका 21 नवंबर को आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ छ ग जर्नलिस्ट्स वेल्फेयर यूनियन पिथौरा इकाई के पत्रकारों की टीम के द्वारा टॉस करके किया गया। उपस्थित अतिथियों द्वारा खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए बलराज नायडू जिला अध्यक्ष ने कहा कि, खिलाड़ियों को हमेशा खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए। खेलों में सहभागिता करने से शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। इनके अलावा उपस्थित गौरव चंद्राकर ने कहा सभी क्रिकेट

प्रेमियों से भाईचारा के साथ खेलने की बात कही। आयोजक समिति क्रिकेट अकादमी के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत बबलू सोनी और उनकी पूरी टीम को इस आयोजन के लिए बधाई

देते हुए कहा कि, इस तरह के आयोजन खेलों से समाज व देश में एकता व भाईचारे को बढ़ावा मिलता है। इनके अलावा रमेश श्रीवास्तव, कमलेश डडसेना ने आयोजन समिति व खिलाड़ियों के बारे में अपना उद्बोधन रखा। उक्त आयोजन में मुख्य रूप से पत्रकारों की टीम में बलराज नायडू जिला अध्यक्ष, गौरव चंद्राकर ब्लॉक अध्यक्ष, रमेश श्रीवास्तव, कीर्ति पांडे, राजा बाबू उपाध्याय, कमलेश डडसेना, राजकुमार अग्रवाल, खगेश्वर साहू, युवराज चौहान, मुख्य रूप से उपस्थित थे।

जनता की सेवा सर्वोपरि...भूपेश बघेल

- अरमरी खुर्द रिवागहन में हुआ विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण समारोह

जामगांव आर (समय दर्शन)। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ग्राम पंचायत अरमरी खुर्द,रिवागहन में लाखों रुपए के विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण करते हुए छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा,सुरक्षा,सौहाद्र,समरसता का वातावरण हमने बनाया।यहां की अनमोल धरोहर संस्कृति,सभ्यता परंपरा,धार्मिक आस्था को सुदृढ़ बनाने में सहभागिता निभाए,क्योंकि वर्तमान परिस्थिति बिल्कुल विपरीत चल रही है।भाजपा राज में किसान,मजदूर,गृहणी सब त्रस्त हो चुके है।सभी को हक की लड़ाई लड़नें कमर कस के तैयार रहना है।भाजपा शासन के एक साल में एक भी विकास कार्य पंचायत में नहीं पहुंची है।उक्त बातें पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आयोजित समारोह के दौरान कही। रिवागहन में सामुदायिक भवन 6.50लाख,अरमरी खुर्द में सामुदायिक भवन 6.50लाख का लोकार्पण,जिप निधि से साहू भवन रिवागहन में किचनसेड निर्माण कार्य(2लाख),पेयजल हेतु टंकी पंप सहित(1लाख),नाली निर्माण (2लाख)का भूमिपूजन शामिल है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में जिप उपाध्यक्ष

अशोक साहू ने माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री बघेल जी ने प्रत्येक ग्रामों में सड़क,स्वास्थ्य,शिक्षा,सिंचाई सहित अनेकों अधोसंरचना के लिए करोड़ों की राशि स्वीकृति प्रदान कर प्रत्येक ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते है।

स्वागत भाषण सरपंच देवकी साहू,अभिनंदन पत्र उपसरपंच प्रेमलाल साहू,आभार सचिव मनीष चतुर्वेदी ने किया।

समारोह में आशीष वर्मा,अशोक साहू,राजेश ठाकुर,रूपेंद्र शुक्ला,भेष आठे,कपूर साहू,रूपेंद्र साहू,जगदीश साहू,रूपचंद गजपाल मंचासिन रहे।

इस अवसर पर शिव साहू,खोरबाहरा साहू,कोमल साहू,चूरामन साहू,शैलेन्द्र बंछोर,अनिरुद्ध साहू,निर्मल यादव,लोमन साहू,ओमप्रकाश वारधे,चित्रसेन साहू,नरेंद्र साहू,लक्ष्मण यादव,लोकेश्वर,उमाशंकर साहू,नम्मू साहू,देव साहू,जयप्रकाश,रणजीत,विश्राम सिंह,कामता सेन,दयालु साहू,डोमन लाल,सुंदर लाल,झूमक साहू,रामलाल गजपाल,भूपत साहू,केशव साहू,धनेश यादव,राजेंद्र यादव,तिलोचन साहू,हेमनाथ,रामनाथ छपहा पंचगण एवं ग्रामीणजन उपस्थित थे।

बसना विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने बसना एवं पठियापाली मे समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का किया शुभारंभ

बसना (समय दर्शन)। बसना के कृषि उपज मंडी प्रांगण एवं पठियापाली में 21 नवम्बर को विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने छत्तीसगढ़ महतारी के तैल चित्र पर माल्यार्पण किया और इलेक्ट्रॉनिक तौल व अन्य उपकरणों का पूजन कर धान खरीदी की प्रक्रिया की शुरुआत की। विधायक अग्रवाल ने किसानों को धान खरीदी की शुभारंभ की बधाई देते हुए उन्हें सफल फसल बिक्री के लिए शुभकामनाएं दीं।

विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने कहा कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी से किसानों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य मिलेगा और उनकी आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित होगी। इस मौके पर उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने धान को मंडी में लाकर समर्थन मूल्य का लाभ उठाएं। धान खरीदी का शुभारंभ किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर था, जो क्षेत्र के कृषि समुदाय के लिए आर्थिक विकास का प्रतीक है। मंडी प्रांगण में हुए इस उद्घाटन कार्यक्रम में किसानों और मंडी प्रबंधन के बीच तालमेल और सहयोग की भावना स्पष्ट नजर आई। विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने कहा कि, भविष्य में भी किसानों के हित में इस प्रकार के कदम उठाए जाते रहेंगे।

धान खरीदी उद्घाटन कार्यक्रम के माध्यम से बसना के किसानों को समर्थन मूल्य पर अपने धान को बेचने का अवसर मिला है, जो कृषि क्षेत्र में सकारात्मक संकेत देता है। विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने इस मौके पर सभी किसानों का स्वागत किया और भविष्य में भी उनके लिए समर्थन और सहयोग बनाए रखने का वादा किया।

कार्यक्रम का समापन सभी अतिथियों और किसानों की शुभकामनाओं के साथ हुआ। विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने मंडी प्रबंधन और सहकारी समिति के सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए किसानों के आर्थिक उत्थान के लिए निरंतर कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

इस अवसर पर शाखा सहकारी समिति बसना के अध्यक्ष जन्मजय साव भी उपस्थित रहे, जिन्होंने सभी सम्माननीय जनों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में बसना विधानसभा भाजपा के संयोजक डॉ.एन.के. अग्रवाल, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष रमेश अग्रवाल, मंडल अध्यक्ष अनिल अग्रवाल,विधायक प्रतिनिधि-अभिमन्यु जायसवाल, कामेश बंजारा, मोहित पटेल, सोहन पटेल,समिति अध्यक्ष गण-कन्हैया प्रधान, अमित साहू, बद्री प्रसाद पटेल, संतोष नायक,प्रहलाद पटेल,परदेशी पटेल, हबेकांटा सरपंच त्रिलोचन भोई, कुलदीप प्रधान, ग्राम गौंटिया नोहर सिंह,किसान मोर्चा अध्यक्ष सुनील प्रधान और अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा समिति सदस्य एवं विभागीय कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

विधायक की छापेमारी से रेत माफियाओं में खलबली

सरायपाली (समय दर्शन)। सरायपाली विधायक प्रतिनिधि भरत मेश्राम को रेत माफ्याओं से जान से मारने की धमकी दी गई है। इसकी शिकायत देर रात पुलिस थाने में की गई।

पुलिस को दिए शिकायत के अनुसार 20 नवंबर की रात 8 बजे के लगभग विधायक प्रतिनिधि भरत मेश्राम बसना से घर की ओर लौट रहा था इसी दौरान पीछे से आ रही हाइवा ने उसे कट मार दिया जिसके चलते उन्होंने गाड़ी को घंटेश्वरी मंदिर के समीप हाइवा को रोकवा। इसी दौरान हाइवा में अवैध रेत होने की जानकारी पर उन्होंने इसकी जानकारी विधायक चातुरी नंद को दूरभाष के माध्यम से दी। विधायक ने एसडीएम और तहसीलदार को कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। तहसीलदार के पहुंचने के पूर्व ही हाइवा मालिक मनीष वाधवा के सुपुत्र वहां पहुंच चुके थे और पहुंचते ही विधायक प्रतिनिधि भरत मेश्राम को ऊंची पहुंच का हवाला देते हुए जान से मारने और देख लेने की धमकी दी गई। उन्होंने विधायक प्रतिनिधि को लूट के झूठे मामले में फंसाकर जेल भेजवाने की भी धमकी दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार तहसीलदार जब कार्रवाई करने पहुंचा तो उन्हें भी धमकाया गया।

बड़े पैमाने पर हो रहा अवैध रेत और धान परिवहन- सरायपाली क्षेत्र के रेहटीखोल और सिरपुर बैरियर से पड़ोसी उड़ीसा राज्य से अवैध रेत और धान का परिवहन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। पुलिस, माइनिंग और वन विभाग के अधिकारियों के मिलीभगत से अवैध अवैध रेत और धान परिवहन को अंजाम दिया जा रहा है। महासमुंद कलेक्टर ने अवैध धान और रेत परिवहन पर रोक लगाने सख्ती बरतने का निर्देश जारी किया है लेकिन उनके निर्देशों का खुला माखौल उनके ही अधीनस्थ कर्मचारी उड़ा रहे है।

विधायक द्वारा निरंतर छापेमार कार्यवाही- क्षेत्रीय विधायक चातुरी नंद पिछले 2- 3 दिनों से देर रात्रि सीमावर्ती क्षेत्रों के बैरियरों में पहुंचकर अवैध रेत और धान परिवहन का निरीक्षण कर रही है। 19 नवंबर की रात्रि विधायक नंद ने रेत से भरी हाइवा को सिंघोड़ा पुलिस थाने का सुपुर्द किया।

तहसीलदारों के हड़ताल से तहसील स्तर के न्यायालयीन काम काज ठप्प रहा

बसना (समय दर्शन)। बस्तर तहसीलदार के साथ हुए दुर्व्यवहार को लेकर छत्तीसगढ़ के तहसीलदारों ने बस्तर तहसीलदार के समर्थन में बसना तहसील में बीते दिन दिन भर कार्य ठप्प रहा । बसना तहसीलदार, नायब तहसीलदार न्यायालय भंवरपुर ,पिरदा , उप तहसील मुख्यालय में तहसीलदार, नायब तहसीलदार के हड़ताल में होने के कारण बीते दिन तहसील स्तर के न्यायालीन कार्य ठप्प रहा । लोग दूर दराज से आकर बिना काम वापस गए। जिसके कारण आम जनता को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार विगत दिनों बस्तर में पदस्थ नायब तहसीलदार मिश्रा जी से बिलासपुर के एक पुलिस अधिकारी द्वारा बदसुलूकी कर उन्हे तथा उनके परिवार को थाने में जबरन बैठा दिया गया था। जिसके कारण राजस्व विभाग के नायब , तहसीलदार, एवम तहसीलदार , स्तर के अधिकारी हड़ताल में चले गए है । जिससे आम जनता को भारी कठिनाई हो रही है। अनुविभागीय अधिकारी बसना मनोज कुमार खाण्डे दिनभर कार्यालय में रहे,पर तहसील स्तर के काम के लिए लोगों को कठिनाई का सामना करना पडा । उपरोक्त संबंध में बसना तहसील, उप तहसीलदार भंवरपुर , पिरदा के तहसीलदार ,नायब तहसीलदार से मीडिया द्वारा फोन संपर्क करने पर उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

बसना महाविद्यालय में वर्ल्ड साइंस डे पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

बसना (समय दर्शन)। स्व.जयदेव सतपथी शासकीय महाविद्यालय बसना में प्राचार्य डॉ एस.के.साव के मार्ग दर्शन में , आई क्यू एस सी एवं विज्ञान संकाय के संयुक्त तत्वाधान में वर्ल्ड साइंस डे मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुवात रोशनी गुप्ता ने की। उन्होंने इस दिवस को मनाने के उद्देश्य और महत्व को विस्तार से बताया और साथ ही बताया कि, इस वर्ष का थीम ..

वाय साइंस मैटर इंगेजिंग माइंड एंड इंपावरिंग फ्यूचर है..

जिसका मुख्य उद्देश्य- युवा पीढ़ी को साइंस टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मेडिकल के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

इसके पश्चात श्रीमती आरती साव ने इस दिवस के अंतर्गत मनाये जाने वाले प्रतियोगिताओं के विषय वस्तु के बारे में चर्चा की।

जिसके अंतर्गत उन्होंने बताया कि, किस प्रकार माइक्रो प्लास्टिक हमारे वातावरण के लिए हानिकारक है, तथा आध्यात्म एवं विज्ञान में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

इसके पश्चात श्रीमती गितिका प्रधान ने बताया कि, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी का पारिस्थितिक तंत्र पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है।

तत्पश्चात मुस्ताक खान एवं

शशांक निर्मलकर ने दैनिक जीवन में विज्ञान के बढ़ते उपयोग पर प्रकाश डाला ।

इस दिवस के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

पोस्टर मेकिंग कंपटीशन में प्रथम स्थान संजय मेहर बीएससी तृतीय वर्ष, द्वितीय स्थान कुमारी सुधा साव बीएससी तृतीय वर्ष , तृतीय स्थान सूरज कन्हेर बीएससी तृतीय वर्ष रहे ।

तथा ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कुमारी पायल प्रधान बीएससी प्रथम वर्ष ,द्वितीय स्थान जागृति साहू बीएससी तृतीय वर्ष , तथा तृतीय स्थान दिलेश्वरी साव बीएससी प्रथम वर्ष रहे ।

वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मणि शंकर साव बीएससी तृतीय वर्ष रहे ।

एवं तृतीय स्थान तुषार चौहान बीएससी प्रथम वर्ष, व संदीपनी जगत बीएससी तृतीय वर्ष रहे।

इस कार्यक्रम मे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर प्रथम,द्वितीय व तृतीय स्थान आने वाले विद्यार्थियों को प्राचार्य डॉ. एस. के.साव ने उज्जवल भविष्य की कामनाओं के साथ बधाई व शुभकामनाएँ प्रदान की । इस दौरान महाविद्यालयीन स्टाफव बी एस सी के छात्र छात्राएँ उपस्थित रहे।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.) 491111 से मुद्रित कर बी-4, प्रेस काम्प्लेक्स, इंदिरा मार्केट, दुर्ग छ.ग. 491001 से प्रकाशित। संपादक :- रोहित खड़तकर,
समाचार संपादक : दामोदर राव, फोन नं.-0788-4051213, मो. 9827104452, रायपुर कार्यालय:-0771-4218364, ईमेल - samay.darshan191@gmail.com पं. क्र. CHHHIN/2011/41517 डाक पंजीयन क्रमांक छ.ग./दुर्ग/61/2024-26